9882

तित्थयर

॥ जैन भवन ॥

वर्द्धमान महावीर माता त्रिशला की गोद में

वर्ष : २७ अंक : ७ अक्टूबर : २००३

ज्ञान से पदार्थों को जाना जाता है,
दर्शन से श्रद्धा होती है,
चारित्र से कमास्त्रव की रोक होती है,
और तप से शुद्धि होती है।

Sethia Oil Industries Ltd.

Manufacturers of De-oiled Rice Bran, Mustard Deoiled Cakes, Neem deoiled Powder, Ground-nut De-oiled Cakes, Mahua deoiled cakes etc. And Solvent Extracted Rice Bran Oil, Neem Oil, Mustard Oil etc.

Plant
Post Box No. 5
Lucknow Road
Sitapur - 2261001 (U.P.)
Ph: 242017/42397/42073 (05862)
Gram - Sethia - Sitapur
Fax: 242790 (05862)

Registered Office
143, Cotton Street
Kol - 700 007
Ph: 2238-4329/ 8471/5738
Gram - Sethia Meal

Executive Office
2, India Exchange Place
Kolkata - 700 001
Ph: 22201001/9146/5055
Telex: 217149 SOIN IN
FAX: 22200248 (033)

तित्थयर

श्रमण संस्कृति मूलक मासिक पत्रिका

वर्ष - २७ अंक - अक्टूबर, २००३

लेख, पुस्तक समीक्षा तथा पत्रिका से सम्बन्धित पत्र व्यवहार के लिये

पता - Editor : Titthayar, P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007

Phone : 2268-2655, e-mail : jbhawan@vsnl.net.in

विज्ञापन तथा सदस्यता के लिये कृपया सम्पर्क करें —

Secretary, Jain Bhawan, P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007

Subscription for one year : Rs. 55.00, US$ 20.00,

for three years : Rs. 160.00, US$ 60.00,

Life Membership : India : Rs. 1000.00, Foreign : US$ 160.00

Published by Smt. Lata Bothra on behalf of Jain Bhawan from P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007, Phone : 2268-2655 and Printed by her at Arunima Printing Works, 81, Simla Street Kolkata - 700 007 Phone : 2241-1006

संपादन

श्रीमती लता बोथरा

॥ जैन भवन ॥

Jainology and Prakrit Research Institute

Jain Bhawan, P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007.

Phone-2268-2655. e-mail - jbhawan@vsnl.net

अनुक्रमणिका

क्र. सं.	लेख	लेखक	पृ. सं.
१.	आदिपुराण में राजनीतिक विचारों-की अभिव्यञ्जना	श्रीमती मंजू जैन	३७१
२.	भगवान् महावीर और औषधि विज्ञान	मुनि दर्शन विजयजी	३८०
२.	कर्म की कहानी	पन्यासप्रवर श्री सुयश मुनि जी	३८८
३.	श्री चन्द्रराज चरित्र		३९८
४.	संकलन		४०७

कवरपृष्ठ : स्वर्गीय हीराचन्द दुगड़ द्वारा चित्रित एवं श्री जयन्त दूगड़ के सहयोग से प्राप्त चित्र में भगवान् महावीर माता त्रिशला की गोद में।

Composed by:

Jain Bhawan Computer Centre, P-25, Kalakar Street Kolkata - 700 007

आदिपुराण में राजनीतिक विचारों की अभिव्यञ्जना

श्रीमती मंजू जैन

आदिपुराण जैनागम में प्रथमानुयोग का सर्वश्रेष्ठ ग्रंथ है। यह जिनसेनाचार्य की महत्त्वपूर्ण रचना है। इसमें प्रमुखतः तीर्थंकर ऋषभदेव के जीवन चरित्र का वर्णन है। यद्यपि जिनसेनाचार्य इसे महापुराण का रूप देकर अन्य महापुरुषों के जीवन चरित्र का भी वर्णन करना चाहते थे लेकिन ग्रंथ के रचनाकाल के बीच में ही वे देवगति को प्राप्त हुए एवं उनके अधूरे कार्य को आचार्य गुणभद्र ने पूरा किया।

समुद्र के समान इस गंभीर रचना का समय ८वीं तथा ९वीं शताब्दी है। इसमें ४७ पर्व हैं जिसमें प्रारम्भ के ४२ पर्व तथा तैतालीसवें पर्व के ३ श्लोक जिनसेनाचार्य द्वारा रचित हैं। शेष पर्व व १६२० श्लोक गुणभद्राचार्य द्वारा रचित है।

आदिपुराण महापुराण है। स्वयं जिनसेनाचार्य के शब्दों में, यह प्राचीनकाल से प्रचलित होने से पुराण है, तीर्थंकर आदि महापुरुषों का उपदेश एवं कल्याणकारी होने से यह महापुराण है। इसमें धर्म है, मुक्ति का पद है, कविता है एवं तीर्थंकरों का चरित्र है।

आदिपुराण संस्कृत साहित्य का एक अनुपम रत्न है। यह पुराण है, महाकाव्य है, धर्मकथा है, धर्मशास्त्र है, राजनीतिशास्त्र है, आचार शास्त्र है तथा युग की आद्य व्यवस्था को बतलाने वाला महान् इतिहास है। इसमें लगभग सभी विषयों का प्रतिपादन किया गया है।

आदिपुराण में भगवत् जिनसेनाचार्य ने राजनीतिक सिद्धान्तों की सर्वोत्तम व्याख्या की है। सम्राट भरत छः खण्ड की दिग्विजय के पश्चात् आश्रित राजाओं को जिस राजनीति के पालन का उपदेश देते हैं एवं ऋषभदेव सम्राट भरत के राज्य भार संभालते समय जिस कल्याणकारी

राजनीति को समझाते हैं और भरत प्रजा के हित को सर्वोपरि रख शासन करने की शपथ लेते है उस आधार पर यदि आज राज्य व्यवस्था कायम हो तो सर्वत्र सुख व शांति छा जाय और दुःख व अशांति के काले मेघ क्षत-विक्षत हो जाये।

आदिपुराण में वर्णित राजनीति अहिंसा पर आधारित है। वहाँ प्रजा का हित ही राज्य का सर्वोपरि लक्ष्य है। भरत व ऋषभदेव ने यह बताया, स्वयं जीओं और दूसरों को भी जीवित रहने दो, सबके जीवन जैसे सफल बने वैसे परस्पर सहायक बनो। इस शिक्षा में समष्टि का हित गर्भित था। अतः आदिपुराण की राजनीति का प्रथम व सर्वोपरि उद्देश्य जनहित व प्रजापालन था।

प्रजानां हितकृद्भूत्वा भोग भूमि स्थिति च्युतौ,
नाभिराजस्तदोद्भूतो भेजे कल्पतरू स्थितम्[१]
जनहित प्रजानां जीवनोपांयमननात्मनवो मताः[२]

प्रजा का हित चाहने वाले नाभिराय हुए इसीलिये वे कल्पवृक्ष की स्थिति को प्राप्त हुए अर्थात् वे कल्पवृक्ष के समान प्रजा का हित करते थे। वे प्रजा के जीवन का उपाय जानने से मनु कहलाये।

राजा वृषभदेव ने प्रजा का कल्याण करने वाली आजीविका का उपाय सोचकर, उसे बार-बार आश्वासन दिया कि तुम भयभीत मत होओ।[३]

इस प्रकार जनहित एवं सर्वोदयी भावना शासन व्यवस्था का सर्वप्रथम लक्ष्य है। इसी कारण से राजा को न्याय प्रिय होना भी बहुत आवश्यक है। राजा अनीति अथवा अन्याय का अवलम्बन न ले इसके लिये वह प्रतिबंधित था। यदि वह अपने कर्तव्य से च्युत हो जाता है या जनहित से भटक जाता है तो वह धर्मभ्रष्ट एवं अन्यायी हो जाता है और राजा कहलाने के अयोग्य हो जाता है।

भरत दिग्विजय करके राजाओं को शिक्षा देते हुए कहते हैं –

तुम लोग न्यायपूर्वक प्रजा का पालन करो। यदि अन्याय में प्रवृत्ति रखोगे तो अवश्य ही तुम्हारी वृत्ति का लोप हो जावेगा।[४]

इस (न्यायप्रिय) राजवृति का अच्छी तरह से पालन करते हुए आप लोग आलस्य छोड़कर प्रजा के साथ न्यायमार्ग से बर्ताव करो।[५] वह न्याय

दो प्रकार है (१) दुष्टों का निग्रह (२) शिष्ट-पुरुषों का पालन। यही क्षत्रियों का सनातन धर्म है।[६] जो राजा धर्म का पालन करता है वह धर्म विजयी होता है। जिसने अपनी आत्मा को जीत लिया है एवं न्यायपूर्वक जिसकी आजीविका है वही पृथ्वी को जीत सकता है।[७] न्यायपूर्वक बर्ताव करने से इस संसार में यश का लाभ होता है। महान वैभव के साथ पृथ्वी की प्राप्ति होती है। परलोक में स्वर्ग की प्राप्ति होती है। अनुक्रम से वह तीनों लोकों को जीत लेता है।[८]

इस प्रकार भरत प्रजापालन की रीतियों के विषय में राजाओं को बार-बार शिक्षा देते हैं तथा योग व क्षेम का चिन्तवन करते हुए स्वयं भी उनका पालन करते है।[९]

ऋषभदेव पुत्र भरत को कहते हैं, "हे पुत्र ! तुझे प्रजापालन करने में न्याय रूप धन से युक्त होना चाहिए अर्थात् तुम न्याय को ही धन समझ क्यों कि न्यायपूर्वक पालन की गई प्रजा सर्व मनोरथों को पूर्ण करने वाली कामधेनु गाय के समान होती होती है।[१०] हे पुत्र ! तू इसे ही राजवृत तथा राजाओं का कर्तव्य समझ कि न्यायपूर्वक धन कमाना, उसकी वृद्धि करना, रक्षा करना, तीर्थ—स्थान तथा योग्य पात्रों में दान देना।"[११]

प्रजा का पालन करने के लिये अपनी बुद्धि की रक्षा करनी चाहिए। वृद्ध व अनुभवी पुरुषों की संगति कर, इन्द्रियों पर विजय प्राप्त कर, धर्मशास्त्र व अर्थशास्त्र के ज्ञान से अपनी बुद्धि को सुसंस्कृत बनाओ। यदि राजा इसके विपरीत प्रवृत्ति रखेगा तो वह हित तथा अहित का जानकार न होने से बुद्धि से भ्रष्ट हो जावेगा तथा कुमार्गगामियों के वश हो जावेगा।[१२]

प्रजा का पालन करने में राजा को ग्वालिये की तरह होना चाहिये। जिस प्रकार ग्वालिया आलस्य रहित होकर बड़े प्रयत्न से गायों की रक्षा करता है। उसी प्रकार राजा को भी आलस्य रहित हो बड़े ध्यान से प्रजा के हितों की रक्षा करनी चाहिये।[१३]

अतः राजा को प्रजा का हित ध्यान में रखना आवश्य है। साथ ही साथ वह न्यायप्रिय भी होना चाहिये। उसमें पालक के गुण मौजूद होने चाहिये। यह कहावत प्रसिद्ध है कि 'यथा राजा तथा प्रजा' जैसा राजा होगा वैसी प्रजा भी होगी। अतः राजा को न्यायप्रिय होना चाहिये। भ्रष्टाचारी व दुराचारी नहीं होना चाहिये।

आदि क्षेमंकर यह कहते हैं "यह नियम है जैसा राजा होता है वैसी ही प्रजा भी होती है। यदि राजा धर्म प्रिय है तो प्रजा भी धर्म प्रिय होगी। यदि राजा दुराचारी है तो प्रजा भी दुराचारी होगी।"[१४] यह बात वर्तमान में व्याप्त राजनीतिक भ्रष्टाचार शासकों की दुराचारी के लिये सबकपूर्ण चुनौती है। आज राजनीति में ऊपर से लेकर नीचे तक भ्रष्टाचारी व अन्याय का बोलबाला है। ईमानदारी व नीति तो कोसों दूर खिसक गई है। वर्तमान में भी प्रजा की रक्षा करना राजा का परम कर्तव्य होना चाहिये।

भरतजी कहते हैं, दुःखी प्रजा की रक्षा करने में नियुक्त आप लोगों का धर्म योग व क्षेम का हैं अर्थात् जनता के लिये नवीन वस्तु की प्राप्ति एवं पुरानी की रक्षा करना राजा का परम धर्म है। वह धर्म पांच प्रकार का है (१)कुलपालन (२) बुद्धिपालन (३) अपनी रक्षा (४) प्रजा की रक्षा (५) समंजसपना। प्रजा दो प्रकार की है (१) प्रजा की रक्षा करने वाली प्रजा (२) जिसकी रक्षा की जाय, वह प्रजा। अपनी कुल की एवं बुद्धि की रक्षा करने में धर्म ही उत्तम साधन हैं और प्रजा की रक्षा में भी धर्म व न्यायप्रियता का होना आवश्यक है।

राष्ट्र की रक्षा व विकास समुचित हो इसके लिए जनता को तीन वर्गों में बांटा गया। इस वर्गीकरण में गुणों की प्रधानता थी। जनता में सेना (Army), अर्थ (Finance), तथा श्रम (Labour) का वर्गीकरण समुचित होना आवश्यक है। इस तीनों का निर्माण अहिंसा के सिद्धान्त पर होना चाहिये। राष्ट्र के अंग-अंग में इन तीनों की समता व सामर्थ्य होना ही चाहिये।

अतः जहाँ मानव में दर्प, वीरता व साहस की भावना देखने को मिली वह सैन्य वर्ग या क्षत्रिय वर्ग कहलाया। जिन मनुष्यों में बुद्धि तथा साहस के साथ संचय की भावना पायी गई वह वैश्य वर्ग कहलाया, उस पर अर्थ सम्पन्नता का भार डाला गया। उनका कर्तव्य न्यायपूर्वक अर्थ कमाकर एवं संचय कर राष्ट्र को समृद्धिशाली बनाना था। शेष मानव श्रम भार वहन करने के लिये स्वतंत्र था। इस प्रकार का राष्ट्र का वर्गीकरण राजनीति को शक्तिशाली बनाने के निमित्त हुआ।

उपादितास्त्रयो वर्णास्तदा तेनाधि वेदसाः क्षत्रिय वणिजः शूद्रा क्षतत्राणादिर्मुगुणैः।[१५]

राज्य को शक्तिशाली बनाने के निमित्त ही भारत देश में (तत्कालीन भरत क्षेत्र) अनेक नगरों, जनपदों, गाँवों की स्थापना हुई और प्रत्येक का एक-एक शासक नियुक्त हुआ।

तदनन्तर कौशल आदि महादेश, अयोध्या आदि नगर, वन, सीमा सहित गाँव और खैडो आदि की रचना की गई।[१६] सुकोमल, अवन्ती, पुण्डु, कुरू, काशी, कलिंग, अंग, बंग आदि देशों की रचना की गई।[१७]

गाँव बसाने के लिये और उपभोग करने वालों के लिये योग्य नियम बनाना, नवीन वस्तु के बनाने (योग) तथा पुरानी वस्तु (क्षेम) के रक्षा के उपाय के लिये हा 'मां' धिक की दण्ड व्यवस्था लोगों से काम करवाना, जनता से कर वसूल करना यह सब राजाओं के अधीन था। इस प्रकार जनता की रक्षा, उत्पादन में वृद्धि व विकास, दण्ड व न्याय व्यवस्था राजाओं व शासकों द्वारा की जाती थी।

राज्य की व्यवस्था के लिये योग्य धन कैसे मिले इसके लिये कर निर्धारण की व्यवस्था भी शासकों द्वारा लागू की जाती थी। लेकिन टैक्स की वसूली जनता को बिना पीड़ा दिये होनी चाहिये। जैसे दूध दुहने वाली गाय से, बिना पीड़ा दिये दूध दुहा जाता है, उसी प्रकार जनता से कर वसूल किया जाना चाहिये ताकि कर का बोझ जनता पर लादने की नौबत न आये। जनता आसानी से व सहजता से कर अदा कर सके। वर्तमान में कर - व्यवस्था एक भार है जनता को कर से इतना अधिक दबा दिया गया हैं कि अर्थव्यवस्था पंगु बनकर रह गयी। उसमें गरीब अधिक गरीब तथा अमीर, अधिक अमीर बनता चला जा रहा है। आदि पुराण में वर्णित कर व्यवस्था के अनुकूल वर्तमान में दैनिक उपभोग की वस्तुओं पर कर नहीं लगाया जाना चाहिये। हाँ, आरामदेह (Luxury items) वस्तुओं पर अतिरिक्त कर लगाया जा सकता है।

आचार्य जिनसेन ने शासक को अहिंसा के आसन पर आरूढ करा है। राजनीति में हिंसा का पुट नहीं होना चाहिये। भरत क्षेत्र में जनपद में आर्य थे साथ ही उद्दण्ड प्रवृत्ति के लोग (अनार्य) भी थे। उस समय यदि शासन सत्ता को केन्द्रीभूत न किया जाता तो राजनीति में संभवतः खून की नदियाँ बहती फलस्वरूप अहिंसामय राजनीति एवं संस्कृति का उदय नहीं हो

पाता। राष्ट्र के विकास के लिये सम्राट भरत ने शक्ति को केन्द्रीभूत किया। वैसे तो सभी स्वाधीन व स्वतंत्र थे लेकिन अहिंसक संस्कृति की अभिवृद्धि के लिये प्रत्येक शासक को सम्राट की सत्ता स्वीकार करनी होती थी। भरत की षटखण्ड की विजय धर्मपूर्ण थी और लोकोपकार की भावना से अभिप्रेत थी। सभी स्वाधीन थे लेकिन उद्दण्ड बनकर हिंसक बनने और दूसरे के अधिकार छीनने के लिये स्वतंत्र नहीं थे।

युद्ध की नीति एवं विदेश नीति भी अहिंसक थी। युद्ध को टालने का प्रयास किया जाता था। सर्वप्रथम तो युद्ध निहित स्वार्थों के लिये नहीं लड़ा जाता था जनहित के लिए लड़ा जाता था। उसमें भी युद्ध को टालने का प्रयास किया जाता था, फिर भी जनता के हित में लड़ना पड़े तो खूनी संघर्ष नहीं होकर अहिंसक युद्ध ही होना चाहिये। जैसा कि भरत व बाहुबली के बीच हुआ। देशों को, शत्रु देशों से शांति समझौता या संधि करनी चाहिये।

युद्ध को टालने का ही प्रयत्न करें क्योंकि युद्ध जन-हानि एवं माल हानि का कारण है। भविष्य भी बुरा है (अवनति का कारण है) अतः संधि समझौता करना चाहिये।[१८]

वर्तमान युग की अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति भी शांति व समझौतों पर ही आधारित होनी चाहिये ताकि भविष्य में विश्व युद्ध एवं उससे होने वाले भीषण नरसंहार से बचा जा सके।

राजनीति का संरक्षण उचित दण्ड विधान से हो सकता है। यदि राजनीति अहिंसक होगी तो उसकी दण्ड-संहिता की अहिंसक होनी चाहिये। भटका हुआ, उद्दण्ड मनुष्य प्रेम से सुधारा जा सकता है। अहिंसक राजनीति मानव के हृदय में विश्व प्रेम की गंगा बहाती है। मानव को सन्मार्गी बनाती है।

जो राजा दुष्ट व मित्र सभी को निरपराध बनाने की इच्छा रखता है वह मध्यस्थ रहकर सब पर समान दृष्टि रखता है। इस संमजसत्व गुण से न्यायपूर्वक आजीविका करने वाले शिष्ट पुरुषों की रक्षा तथा अपराध करने वाले दुष्ट पुरूषों का निग्रह करना चाहिये।[१९] प्रजा में कोई अपराध करता है तो उसके अनुरूप दण्ड देना चाहिये न कि कठोर दण्ड[२०] कठोर दण्ड देने वाला राजा प्रजा को उद्विग्न कर देता है प्रजा ऐसे राजा को छोड़ देती है।[२१]

समस्त प्रजा को समान रूप से देखना चाहिये यह राजा का समंजसत्व

गुण कहलाता है। दण्ड विधान में क्रूरता व घातकपना नहीं होना चाहिये न ही कठोर वचन बोलने चाहिये और न ही दण्ड की कठोरता ही होनी चाहिये।[२२]

अपराधिक प्रवृत्ति वालों को दण्ड देने की व्यवस्था की गई जिसमें **हा मा धिक** की उत्तरोत्तर कठोर दण्ड व्यवस्था थी। यह वाचनिक दण्ड विधान था। उस समय व्यक्ति इतने में ही अपना मरण समझता था। आज की दण्ड-संहिता अति कठोर है फिर भी वह मानव में सुधार नहीं ला पायी है।

भरत के समय में लोग अधिक अपराध करने लगे थे। तब वध, बंधन एवं शारीरिक बंधन की दण्डनीति भी चलायी गयी।

तत्राद्यै पंचमिर्नणा कुलकुद्भिः कृतागसाम् लक्षणो दण्डः समवस्थापितस्तरा।[२३]

हमाकारश्च दम्ढोऽन्यैः, पंचमि संप्रवर्तितः पंचमिस्तु ततः शैषोर्धमाधिक्कार लक्षणः[२४]

शरीर दण्डनं चैव वध, बन्धनादि लक्षणम् नृणां प्रबल दोषाणां भरतेन् निदोनितम्।[२५]

जो व्यक्ति (अपराधी) प्रजा को सताये व लूटमार करे उसके लिये कठोर दण्ड की व्यवस्था की गई। उसकी संपत्ति जब्त करने का प्रावधान भी रखा गया।

राजा को चाहिये कि वह चोर, डाकू आदि की आजीविका जबरन नष्ट कर दे क्योंकि कांटों को दूर करने से ही प्रजा का कल्याण होता है।[२६]

मनुष्य की उद्दण्डता ने दण्डनीति को कठोरता का बाना पहनाया है। वध, बंधन तथा शारीरिक दण्ड में भी अहिंसक वृत्ति का पूर्ण ख्याल रखना चाहिये। मानव की दृष्टि में व्यक्ति को लज्जित बनाना, देश निकाला देना, व्यक्ति के हृदय में अपराध के प्रति घृणा उत्पन्न करना दण्ड नीति का ध्येय रहा है।

आदि पुराण में शासक के गुणों की चर्चा भी की गई है। यथा—

राजा को सर्वप्रजाजनों के प्रति पक्षपात रहित होकर समंजसवृति अपनानी चाहिये। पक्षपात वृत्ति वाला राजा अपने ही लोगों द्वारा अपमानित होता है उसे रक्षा करने वाली प्रजा के हित की रक्षा भी करनी चाहिये। जो

सैन्य वर्ग देश की रक्षा करते हैं उनकी रक्षा करना राजा का प्रथम कर्तव्य है।

जिस प्रकार आश्रित गायों की रक्षा करने के लिय ग्वाला भरकस प्रयत्न करता है उसी प्रकार राजा भी सेना में घायल सैनिकों का उत्तम उपचार (औषधि वगैरह देना) कराकर विपत्ति का परिकार करे। सही होने पर उसे आजीविका प्रदान करे।[२७]

पराक्रम प्रकट करने वाले एवं अच्छे योद्धाओं को अच्छी आजीविका एवं उचित सम्मान प्रदान करें। उन्हें नौकरी से न हटावे। उनके प्रति अपमानजनक शब्दों का प्रयोग न करे। युद्ध में सैनिकों के मर जाने पर उनके परिवारजनों को नियुक्त करे। उससे राजा की कृतज्ञता होती है।[२८]

राजा को अपने पद के प्रति लिप्सा का भाव नहीं होना चाहिये। समय आने पर शासन व्यवस्था का कार्यभार त्यागकर दूसरों को सौंप देना चाहिये।

बुद्धिमान पुरूष को अपथ्य औषधि के समान राज्य का त्याग कर देना चाहिये। उसे राज्य के विषय में विरक्त हो, भोगोपभोग का त्याग कर देना चाहिये। अन्त समय में तो समस्त आडम्बर का त्याग कर सल्लेखना बुद्धि धारण करनी चाहिये।[२९] राजा चन्द्र गुप्त इसके जीते जागते उदाहरण हैं। उनके पश्चात् होने वाले राजाओं ने राज्य त्याग कर समाधि मरण व्रत ग्रहण नहीं किया। अतः राजा को या शासक पद पर आसीन व्यक्ति को गुणवान, शिक्षक, बुद्धिमान, विद्वान एवं न्यायप्रिय होना चाहिये। धर्मबुद्धि का धारक होना चाहिये। प्रजा के पालन में तत्पर होना चाहिये।

इस प्रकार आदि पुराण में उत्कृष्ट राजनीतिक सिद्धांतों का उल्लेख किया गया है। राजनीति में जहाँ एक ओर सर्वोत्कृष्ट शासक के गुण देखने को मिलते है वहीं स्वयं राजनीति भी लोकोदय, राष्ट्रीयता, सर्वोदय अहिंसा एव पक्षपात रहित भावना से ओतप्रोत हैं।

संदर्भ-ग्रन्थ :–

- आदि पुराण प्रथम भाग, आचार्य जिनसेन, भारतीय ज्ञानपीठ, नयी दिल्ली – १९९३
- आदि पुराण, द्वितीय भाग, आचार्य जिनसेन, भारतीय ज्ञानपीठ, नयी दिल्ली – १९९३
- दिवाकर अभिनन्दन ग्रंथ, जैनोदय पुस्तक प्रकाशन समिति, रतलाम, वी. नि. २४७३

१. तृतीय पर्व, श्लोक २०६, आदिपुराण।

२. वही ३ / २११

३. वही ३ / १९९ इतिकर्तव्यता नतिमीवांस्तदार्यकान। नाभिर्न भेयमित्युक्त्वा ब्याजहारः पुनः स तान।

४. वही ३८ / २५८, पार्थिवान प्रवतान् यूयं न्यायैः पालयतः प्रजाः। अन्यायेषु प्रवृताश्चेद् वृतिलोपो ध्रुवं हि वः।

५. वही ३८ / २६१, प्रजासु वर्तितव्यं भो भवद्भिर्न्यायवर्त्मना।

६. वही ३८/ २५९, न्यायश्व द्वितयो दुष्टनिग्रहः शिष्टपालनम्

७. वही ३८ /२६२, पालयेद्य इमधर्म सधर्मविजयी भवेत्। क्ष्मां जयेद् विजितात्मा हि क्षत्रियो न्यायजीविकः

८. वही ३८ /२६३, इहैव स्याद् यशोलाभो भूलाभश्च महोदयः। अमुत्राभ्युदयावाप्तिः क्रमात् त्रैलोक्यनिर्जयः

९. वही ३८ / २६४ इतिभूयोऽनु शिष्यैतान् प्रजापालन संविधौ। स्वयं च पालयत्येनान् योगक्षेमा नु चिन्तनै : ।

१०. वही ३८ / २६९ त्वया न्यायधनेनागं भक्तिव्यं प्रजाधृतौ। प्रजा कामदुहा धेर्नुमता न्यायेन योजित्ता।

११. वही ३८ / २७०, राजवृतमिदंविद्धि यन्नयायेन धर्नाजनम्। वर्धनं रक्षणं चास्य तीर्थ च प्रतिपादनम्

१२. वही ३८ / २७१, २७२

१३. वही ४२ / १३८, १३९

१४. दिवाकर अभिनन्दन ग्रंथ पृ. ९३, ९४

१५. वही १६/ १८२, १८३, १८४, १८५, १८६.

भगवान् महावीर और औषध विज्ञान

मुनि दर्शन विजयजी

दूसरा अध्याय

हमारे सम्बन्धित विषय का मूल पाठ इस प्रकार है।

तत्थणं रेवतीएगाहा वइणीए मम अट्ठाए दुवे कवोय-सरीरा उवक्खड़िया तेहिं नो अट्ठो। अत्थि से अन्ने पारियासिए मज्जारकड़ए कुक्कुड़ मंसए तमाहराहि एएणं अट्ठो।

(श्री भगवती सूत्र शतक-१५)

इस पाठ के विचारणीय शब्द ये हैं :— (१) दुवे (२) कवोय (३) सरीरा (४) उवक्खड़िया (५) नो अट्ठो (६) अन्ने (७) पारियासिए (८) मज्जार (९) कड़ए (१०) कुक्कुड़ (११) मंसए।

(१) दुवे

यह शब्द कवोय की ही नहीं किन्तु कवोय सरीरा की भी संख्या बताता है । अतः इसका अर्थ दो कवोय नहीं बल्कि कवोय के दो मुरब्बे है। यदि कवोय का अर्थ पक्षी विशेष से लिया जाय तो यहाँ दुवे तथा सरीरा शब्दों में समन्वय नहीं हो सकता क्यों कि पूरा कबूतर नहीं पकाया जाता और यदि अंगोपांग अलग-अलग करके पकाया जाय तो दो सरीर ऐसी संख्या नहीं रहती। अर्थात् दुवे और सरीरा इन दोनों शब्दों में एक शब्द निरर्थक हो जाता है।

यदि कवोय का अर्थ किसी वनस्पति विशेष से लिया जाय तो यहां दुबे और सरीरा इन दोनों का ठीक समन्वय हो जाता है। कवोय फल का मुरब्बा बना हुआ हो उसके दो सम्पूर्ण फलों से दो संख्या का बोध हो जाता है, एवं कवोय फल के मुरब्बे के लिये दुवे कवोय सरीरा आदि शब्द समूह का प्रयोग भी सार्थक हो जाता है। अतः इस बात को स्वीकार करना ही पड़ेगा कि यहां कवोय शब्द का किसी प्राणी (पक्षी) के लिये नहीं वरन् फल के लिये प्रयोग किया गया है। यह बात दुवे शब्द से सिद्ध हो जाती है। अतः इस स्थान पर दुवे शब्द महत्वपूर्ण है।

(२) कवोय

कवोय एक प्रकार की खाद्य वनस्पति है। यह पूरी की पूरी उपष्कृत हो सकती है और बहुत समय तक टिक सकती है। इसके सेवन से ऊष्णता, पित्तज्वर, रक्तविकार तथा आमातिसार आदि रोग शांत होते हैं। कवय का संस्कृत पर्याय कपोत है। कपोत और कपोत से निर्मित शब्दों में अर्थ-वैभिन्न होता है जो निम्न व्यौरे से भली भाँति प्रकट हो जायेगा।

कपोत- एक प्रकार की वनस्पति (सुश्रुत सहिंता)।
कपोत- पारापातः कलरवः, कपोत, कमेडा, कबूतर।
कपोत- पारीस पीपर (वैद्यक शब्द सिन्धु)।
कपोत- कुष्मांड, सफेद कुम्हेडा, भुरा कोला।
कपोती वृत्ति- सादा जीवन निर्वाह।
कापोती - कृष्ण कापोती, श्वेत कापोती, वनस्पति (सुश्रुत संहिता)

श्वेत कपोती समूलपत्रा भक्षयितव्या (सुश्रुत सं० प्र० ८२१)
सक्षीरां रोमशाँ मृदवीं रसेनेक्षु रसोपमाम्।
एवं रूप रसाम् चापि कृष्णा कपोति मादिशेत्।।
कौंशिकीं सरितं तीर्त्वा संजयानयास्तु पूर्वतः।।
क्षिति प्रदेशी वाल्मिकै राचितो योजन त्रयम्।
विज्ञेया तत्र कापोति श्वेता वाल्मिक मुर्धसु।।

(कापोति प्राप्ति स्थान सुश्रुत)

कपोतक	-	सज्जीखार (जै० सं० ४३)
कपोत वेगा	-	ब्राह्मी
कपोत चरणा	-	नालुका
कपोत पुट	-	आठ
कपोत बंका	-	ब्रह्मा, सूर्यफुल्ली
कपोत वर्णा	-	लायची, नालुका
कपोत सार	-	सुर्ख सुरमा
कपोतांघ्री	-	नलिका
कपोतांजन	-	हरा सुरमा
कपोतांडोपम फल	-	निंबु भेद

कपोतिका सफेद कोला—

(निघण्टुरत्नाकर जै० सा० प्र० क० ४३)

पारावते तु साराम्लो, रक्तमालः परावतः।

आ खेतः सार फलो, महापरावतो महान् ।।१३९।।

कपोताण्ड तुल्य फलो ।।१४०।।

(अभिधान संग्रह निघण्टु)

कापोत	-	सज्जी खार (भाव० प्र० निघण्टु)
पारापतपदी	-	माल काँगनी
कपोत चरणा	-	नलिका
पारापत पदी	-	काकजंघा (भा० प्र० निधंटु)

उपरोक्त शब्दों के अर्थ से कपोत शब्द की वनस्पति में व्यापकता पूर्णतः स्पष्ट हो जाती है। कपोत का सीधा अर्थ है एक प्रकार की वनस्पति, पारीस पीपल, सफेद कुम्हड़ा (पेठा) और कबूतर। इनका वर्णन वैद्यक ग्रन्थों में इस प्रकार हुआ है।

(१) पारापत के गुण दोष—

पारापतं सुमधुरं रुच्यमत्यग्निवातनुत् (सुश्रुत संहिता)

(२) पारिसपीपल, गजदंड के गुण दोष–

पारिशो दुर्जरः स्निग्धः कृमिशुक्रकफ प्रदः ।।५।।

फलेऽम्लो मधुरो मूलो, कषाय स्वादुः मज्जकः ।।६।।

(३) कोला, कोंहडा, पेठा, खबहा, काशीफल के गुण दोष–

पित्तध्नं तेषु कुष्मांडं बालं मध्यं कफापहम्,

शुक्लं लघूष्णं सक्षारं दीपनं बस्ति शोधनम् ।।२१३।।

सर्व दोषहरं हृद्यं पथ्यं चे तो विकारिणाम् ।।२१४ ।।

पेठा ऊष्ण, दीपक वस्ति शोधक और सर्वदोष हर है

(सुश्रुत स० ५६ फल वर्ग)

लघुकुष्माडकं रुक्षं मधुरं ग्राहि शीतलम्।

दोषलं रक्तपित्त विघ्नं मल स्तम्भकरं परम्।।

(छोटा कोला ग्राही, शीतल, रक्त-पित्त नाशक तथा मलरोधक है)

कुष्मांड शीतलं वृष्यं स्वादु पाकरसं गुरु।

हृद्यं रुक्षं रसस्यन्दि श्लेष्मलं वात पित्त जित्।।
कुष्माण्डशाकं गुरु सन्निपात ज्व राम शोका निल दाह हारि।।
(कोला-शीतल, पिंत्त-नाशक, ज्वर, आमदाह को शाँत करने वाला है)
(कयदेव निण्घटु)

कुष्माण्डं स्यात् पुष्पफलं पीतपुष्पम् वृहत्फलम् ।।५३।।
कुष्माण्डं बृहणं वृष्यं गुरु पित्तास्त्र वातनुत् ।
बाल पित्तापहं शीतं मध्यमं कफकारकम् ।।५४।।
वृद्धं नाति हिमं स्वादु सक्षारं दीपनं लघु ।
बस्ति शुद्धि करं चेतो रोग हृत्सर्व दोषजित् ।।५५।।
कुष्माण्डा तु भृशं लध्वी, कर्कारु रपि कीर्तिता ।
कर्कारू ग्राहिणी शीता रक्त-पित्त-हरि गुरूः ।।५६।।
पक्का तिक्ताग्निजननी, सक्षारा कफ वातनूत् ।।५७।।

(कोला-पित्तरक्त और वायुदोष नाशक है। छोटा कोला पित्तनाशक, शीतल और कफ-जनक है। बड़ा कोला उष्ण, मीठा दीपक, बास्ति-शुद्धि कारक, हृदयरोग नाशक तथा सर्वदोषहारी है। छोटा कोला ग्राह्य, शीतल, रक्तपित्त दोष नाशक और पक्का हो तो अग्नि वर्धक है)

(भाव प्रकाश निघण्टु-शाक वर्ग)

माँस के गुण और दोष-

स्निग्धं उष्णं गुरू रक्तपित्त जनकं वात हरं च।।
सर्व मांसं वात विध्वंसि वृष्यं।।

मांस रक्त व्याधियों तथा पित्तविकारों को बढ़ाने वाला है

अब यदि महावीर स्वामी के दाहरोग पर विचार किया जाय तो यह बात निर्विवाद सिद्ध हो जाती है कि कपोतपक्षी का मांस रोग का निवारण नहीं कर सकता। इसमें कपोत वनस्पति, पारिस तथा कोलाफल आदि अत्यधिक उपयोगी हैं। साथ-साथ यह तथ्य भी सिद्ध हो जाता है कि रेबती श्राविका के पास जो दुवे कवोय सरीरा थे वह कोई पक्षी नहीं वरन् कोला ही थे।

भगवती सूत्र के प्राचीन चूर्णीकार तथा टीकाकारों ने भी उक्त पाठ का अर्थ कुष्माण्ड फल ही लगाया है। यथा-

कपोतकः पक्षी विशेषः तद्वद् ये फले वर्णसाधर्म्यात् ते कपोते-कुष्मांडे हृस्वे कपोते कपोतके ते चते शरीरे वनस्पति जीव देहत्वात् कपोत

शरीरे। अथवा कपोतक शरीरे इव धूसरवर्ण साधर्म्यादेव कपोतक शरीरे-कुष्माण्ड फले एव। ते उपस्कृते संस्कृते। तेहिंनो अट्ठोत्ति वह्वपायत्वात्।

(रंग की समता के कारण कुष्मांड फल को ही कपोत नाम से पुकारा जाता है। रेवती श्राविका ने उनको संस्कार देकर रख छोड़े थे।)

(आ० अभयदेव सूरि कृत भगवतीसूत्र टीका पृ० ६९१)

(आ० श्री दान शेखर सूरि कृत भ० टीका पृ०)

कुष्माण्ड फल का मुरब्बा दाह आदि रोगों को शांत करता है, आज भी यह बात ज्यों की त्यों खरी उतरती है। आज भी आगरा आदि स्थानों पर कुष्माण्ड का मुरब्बा, पेठा इत्यादि ग्रीष्म ऋतु में अधिक प्रयोग किया जाता है। मेरठ जिले में भी सफेद कुम्हडा जिसका दूसरा नाम कवेलापेठा इत्यादि है, उन्हें तैयार करने में बहुत प्रयोग किया जाता है। सारांश यह है कि कुष्मांड का मुरब्बा, पेठा, पाक आदि गर्मी को शांत करने वाले हैं। और रेवती श्राविका ने भी भगवान महावीर के दाह रोग की शांति के लिये दुवे क्वोय सरीरा अर्थात् कुष्माण्ड फल का मुरब्बा बना कर रखा था। यहाँ कवोय शब्द कुष्माण्ड फल का ही द्योतक है।

(३) सरीरा

सरीरा शब्द कवोय से निष्पन्न पुर्लिग वाले द्रव्य का द्योतक है। यदि यहां 'सरिराणि' शब्द का प्रयोग होता तो इसका अर्थ पक्षी शरीर पर भी करना पड़ता क्योंकि नपुंसक शरीर शब्द ही शरीर या मुरदे के अर्थ में आता है, किन्तु शास्त्राकार को यह भी अभीष्ट नहीं था अतः उसने यहां 'सरिराणि' का प्रयोग नहीं किया है। शास्त्रकार ने यहां पुर्लिग में शरीरा शब्द का प्रयोग किया और उसका अर्थ मुरब्बा या पाक ही है। पुर्लिग का प्रयोग होने के कारण ही इतना अर्थ भेद हो जाता है। आगे आने वाला पुर्लिग शब्द अन्ने भी इस मत की पुष्टि करता है।

दूसरी बात यह है कि मांस के लिये सीधे जाति-वाचक शब्द ही प्रयुक्त होते हैं; उनके साथ शरीर शब्द नहीं लगाया जाता । **विपाकसूत्र** में मांसाहार का वर्णन है मगर किसी जातिवाचक संज्ञा के साथ शरीर शब्द का प्रयोग नहीं हुआ है। हां, वनस्पति के साथ काय शब्द मिलता है। यथा-वनस्पति-काय जिसका अर्थ है वनस्पति रूप, वनस्पति शरीर ऐसा। वास्तव में सरीरा शब्द वनस्पति के साथ उचित संगति पाता है।

प्रस्तुत पाठ में कवोय के साथ जो सरीरा शब्द है वह यहां विशेष्य के रूप में ही है। इसलिये यह बात निश्चित है कि यहां सरीरा शब्द का अर्थ मुरब्बा या पाक ही है।

तीसरा विचारणीय बात यह है कि कवोय सरीरा के पूर्व दुवे शब्द का प्रयोग कर उनकी संख्या बताई गई है। यदि मांस की ओर संकेत होता तो टुकड़ों का बोध करने वाले शब्द विद्यमान होने चाहिए थे किन्तु यहां टुकड़ों का कोई प्रसंग नहीं है। इस कारण मुरब्बे का बोध होना ही युक्ति संगत है। सारांश यह है कि यहां सरीरा शब्द मुरब्बे के लिये तथा दुवे कवोय सरीरा शब्द दो कुष्मांड के मुरब्बे के लिये ही लिखे गये हैं।

(४) उवक्खडिया

उवक्खडिया शब्द पुर्लिंग में है तथा संस्कार का सूचक है। **उपासक दशांग** और **विपाक सूत्र** आदि जिनागमों में मांस के लिये भज्जिये, तलए शब्दों का प्रयोग हुआ है, उवक्खडिया का नहीं। **भगवती सूत्र** में भी प्रशस्त भोजन के लिये ही उवक्खडिया शब्द प्रयोग में आया है। इसका आशय यह है कि माँस के संस्कारों में 'उवक्खडिया' शब्द प्रयोग में नहीं आता है प्रस्तुत स्थान में जो उवक्खडियो का प्रयोग हुआ है वह भी 'कवोय-सरीरा' के अर्थ कुष्माण्ड का पाक होने का ही अनुमोदन करता है।

(५) नो अट्ठो

नो अट्ठो शब्द निषेध के लिये है। रेवती श्राविका ने भगवान् **महावीर** के निमित्त कुष्मांड पाक बना कर रखा था, किन्तु निमित्तदोष लग जाने के कारण भगवान् ने **श्री सिंह मुनि** को उसे न लाने का निर्देश किया। जहां निमित्त-दोष वाला आहार ग्रहण करना भी निषिद्ध है, वहीं मांसा हार की बात मानना तो दुस्साहस ही है।

(६) अन्ने

अन्ने शब्द कुक्कुड मंसए का सर्वनाम है और इसका अर्थ अन्य। अन्ने, कवोय-सरीरा एवं कुक्कुड मंसए तीनों शब्द पुर्लिंग में है। पुर्लिंग होने के कारण वे वनस्पति विशेष के ही परिचायक हैं, अन्ने शब्द से यही प्रमाणित होता है।

(७) पारियासिए

पारियासिए शब्द बिजौरा पाक का विशेषण है। इसका अर्थ होता है अधिक पुराना (अधिक समय का)

एक दिन की बासी वस्तु के लिये पारियासिए शब्द का प्रयोग नहीं बल्कि पज्जुसिए का प्रयोग होता है। ऐसी स्थिति में यदि यहां किसी भी प्रकार के मांस का उल्लेख होता तो यथानुकूल पज्जुसिये शब्द का प्रयोग होना चाहिये था किन्तु यहाँ तो मांस का प्रसंग ही ठीक नहीं बैठता, क्यों कि बासी माँस तो रोग की वृद्धि करता है और इसको दाह रोग के निवारणार्थ व्यवहार में लिया जाय यह बात मानी ही नहीं जा सकती। अतः पारियासिए का विशेष्य मांस नहीं है यह निर्विवाद कहा जा सकता है।

इस स्थान में अत्थि शब्द के साथ 'उवक्खडिया' अथवा 'भज्जिए' शब्द प्रयुक्त नहीं हुए हैं। इस कारण वह वस्तु मांस नहीं है वरन् लम्बे समय तक रहने वाली कोई वस्तु है अर्थात् एक प्रकार का पाक है।

वृहत्कल्पसूत्र—में अधिक काल तक टिकने वाले पदार्थ घी, तैल आदि-के सम्बन्ध में पारियासिए का प्रयोग हुआ है। इस हिसाब से यहां पुराना (बिजौरा पाक) के अर्थ में पारियासिए शब्द का प्रयेग सर्वथा उचित है और युक्ति युक्त भी।

(८) मज्जार

मज्जार पदार्थों में शीतलता की भावना या पुट देने के लिए प्रयुक्त होने वाली वस्तु है। जिसका प्रभाव गर्मी (उष्णता, दाह) इत्यादि रोगों को शांत करने में उपयोगी है मज्जार का संस्कृत पर्याय मार्जार होता है। मारजार और मार्जार से बने हुए कतिपय शब्दों का अर्थ भिन्न होता है। यथा-

मार्जार- अब्भसह, बोयाण, हरितग, तंडुलेज्जग, तण, वत्थुल, - चोरग, मंजार पोई चिल्लया, एक प्रकार की वनस्पति, भाजी - (भगवती सूत्र शतक-२१)

मार्जार - वत्थुल, पोरग, मज्जार पोइवल्लीय, पालक्का। एक प्रकार की वनस्पति।

(पन्नवणा सूत्त पद १ हरित विभाग)

मार्जार - विरालिकाऽभिधानो वनस्पति विशेषः।

(भगवती श० १५ टीका)

विदारी द्वयम् विदारी क्षीरविदारी च।
गजवाजि प्रिया वृष्या वृक्षवल्लि विडालिका।।

बिडालिका - एक प्रकार की औषधि।

(दशवैकालिक सूत्र अ० ५ उ० २ गा० १८)

बिडालिका - एक प्रकार की औषधि।

(आचारंग सूत्र सू० ४५ पृ० ३४८)

बिडालिका - वृक्षपर्णी

—(क० स० श्री हेमचन्द्र सूरी कृत निघण्टु संग्रह)

विराली - एक तरह की बेल।

—(पन्नवणा सूत्र वल्ली पद १ गा० ४४)

बिडाली - स्त्री, भूमि, कुष्मांडे, पेठा भुंयकोला।

—(शब्दार्थ चिन्तामणि कोष)

मार्जार - रक्त चित्रक।

मार्जार - वायुविशेष।

बिल्ली - वनस्पति विशेष

(पन्नवणा प० १ गा० १९-३७)

क्रमशः

कर्म की कहानी

पन्यासप्रवर श्री सुयश मुनि जी

जीवन में सबसे बड़ा दुःख का कारण है भय। जीवन में अगर किसी भी प्रकार का प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष संकितभय आ जाय तो सम्पूर्ण जीवन को ही व्यर्थ कर देता है। जीवन को अभय बनाना ही पूर्णता की प्राप्ति है। पर पूर्ण अभय अवस्था तो वीतरागता में ही संभव है। इस स्थान तक पहुँचने के लिए हमारे साथ लगे हुए परम्परागत कुछ शत्रुओं पर विजय प्राप्तकरना अत्यन्त आवश्यक है। जीवन को पारदर्शी बनाने के लिये निम्नोक्त शत्रु पर विजय प्राप्त करना है।

(१) आन्तर्शत्रु विजय।

(२) इन्द्रिय विजय।

(१) आन्तर्शत्रु विजय– हमारे अन्दर छः महाशत्रु बैठे हैं। (क) काम (ख) क्रोध (ग) लोभ (घ) मान (ङ) मद (च) हर्ष।

काम– कामेच्छा पूर्ति के लिये व्यक्ति विजातीय सम्बन्ध अनैतिक कार्य करने या करने के लिये प्रयास के कारण कभी-कभी अपने जीवन को संकट में फंसा देता है। अपने जीवन को ही बर्वाद कर देता है या इसके कारण गुलाम बनकर स्वयं को पंगु-बना देता है। इसी के कारण कभी-कभी बड़ा संग्राम भी हो जाता है।

क्रोध–क्रोध के कारण व्यक्ति अविवेकी बन जाता है। अविवेक के कारण अनुचित कार्य करके अनेक बाह्य शत्रु तैयार करता है।

लोभ– लोभवृत्ति के कारण व्यक्ति अधिक से अधिक धन संग्रह करने का प्रयास करता है। इसी के कारण अनाधिकृत चेष्टा करके अनेक शत्रु बना लेता है। संग्रहित धन की चोरी होने से मानसिक कष्ट होता है। धन शत्रु की माता है।

मान– स्वयं को बड़ा बनाने के लिए अन्य को छोटा समझना या छोटा बनाने का प्रयत्न करना मान है। अहंकारी व्यक्ति अपनी इच्छा के

विरुद्ध चलने वाले सभी को शत्रु समझते है। अहंकारी व्यक्ति अन्य की सत्य बात को भी झूठ ठहराने का प्रयास करते है या झूठ ही मानते है।

मद– सत्ता, धन, कूल, जाति आदि का मद व्यक्ति को अन्धा बना देता है। वैसे व्यक्ति स्वयं को ही सर्वस्व समझते है। मद एक प्रकार का नशा है, इससे व्यक्ति की चेतना ही नष्ट हो जाती है।

हर्ष– हर्ष भी हमारा आन्तर्शत्रु का एक महत्वपूर्ण भाग है। देखने से तो यह ऊपर से सुन्दर दिखता है, पर इसके अन्दर हलाहल जहर है। क्योंकि हर्षावेश में हम अपने आप को ही भूल जाते है।

इन आन्तर्शत्रु के कारण ही बाह्य शत्रु खड़े हो जाते है। अगर उक्त आन्तर्शत्रु को नष्ट कर दिया जाय तो स्वतः ही हमारे सभी शत्रु नष्ट हो जायेगें।

एक बार विश्व विजेता महान सिकन्दर बोले–मैं विशाल राज्य का स्वामी हूँ, विशाल सैन्यबल मेरे पास है और मेरे राजमहल में अनेक सुन्दर स्त्रियां है, अतः मैं एक सार्थक महामानव हूँ।

वे सभी बाते सुनकर महान तत्वज्ञ उनके धर्म गुरु बोले–सम्राट तब तो तुम बड़े ही दुःखी, असहाय हो, क्योंकि कल कुछ मिलेगा या नहीं इसके भय से राज्य का संग्रह किया। शत्रु के हाथ मर जाने के भय से सैन्यबल रखा और वासना का दास बनकर स्त्रियों का सहारा लेकर जी रहे हो, अर्थात तुम बहुत ही बड़े गुलाम हो।

अन्तर्शत्रु से हमारा इतना बड़ा सम्बन्ध है कि इनको हमने अपना आभूषण मान लिया है। शांत चित्त से विचार करगें तो पायेगें कि इन सब से जीवन को सुलझाने के बजाय और अधिक उलझाया है। पाने के नामपर अनेक खो बैठे है। हम अगर इतिहास पर दृष्टिपात करेगें तो पायेंगे कि इन शत्रु के कारण ही अनेक महान व्यक्ति अपने जीवन को ही समाप्त कर दिये है।

–क्रोध के कारण महान मुनि को चण्ड कौशिक नाग बनना पड़ा।

–लोभ के कारण मम्मन शेठ को महदुःख भोगना पड़ा।

–मान के कारण बाहुबली १२ वर्ष तक काउसग्ग में खड़े रहे पर ज्ञान नहीं हुआ।

–मद के कारण औरंगजेब ने अपने पिता को कैद में बंद कर दिया।

—काम के कारण रावण का वंश ही नष्ट हो गया।

—हर्ष के कारण भगवान महावीर पूर्व भव में अन्य के कान में गरम-गरम शीशा डलवाये थे।

इस सभी प्रवृत्तियों का परिणाम विपरीत मिला। आन्तर्शत्रु का उपद्रव के कारण ही जीवात्मा विविध प्रवृत्ति करता रहता है। इन प्रवृत्ति में जो आनन्द मिलता है, वे आनन्द वहीं मात्र आनन्दाभाष है। चमड़ी में खूजली की बिमारी में जैसे खाज करने में प्रथम आनन्द की अनुभूति होती है, पर बाद में जलन ही होता है वैसे ही उपरोक्त शत्रु का परिणाम है।

इन आन्तर्शत्रु के उपर जितनी विजय उतनी ही वास्तविक आनन्द की अनुभूति होती है। इन पर अंशतः भी विजय प्राप्त किये बिना जीवन में विकास करना या सद्गृहस्थ बनना संभव नहीं है।

ये आन्तर्शत्रु ही हमारे वास्तविक शत्रु है, बाह्य जगत में हमारा कोई शत्रु नहीं है और अगर दिखता भी है तो इनके मूल में आन्तर्शत्रु ही है। इन शत्रुओं को जीतने का कुछ सामान्य उपाय।

सत्संग—अच्छे विचार और आचार युक्त व्यक्ति के पास बैठना और उनका सहवास करना।

स्वाध्याय—सत् शास्त्र का पठन-पाठन करना। अपनी वास्तविक अवस्था का चिन्तन-मनन करना।

सद्भावना—संसार के प्रत्येक वस्तु में अच्छा और बुरा दो पहलू होता है। उन सभी वस्तुओं में अनावश्यक बुराई को छोड़कर अच्छाई को ही देखना।

व्रत-नियम का पालन—समय-समय पर व्रत-नियम-आराधना उपासना करना।

विपक्षी उचित विचार का अनुसरण—अपने विरोध पक्ष का विचार अगर उचित और आचरणीय है तो उसको स्वीकार अवश्य करना।

इन नियमों को अनुसरण करने से एक सीमातक आन्तर्शत्रु में विजय प्राप्त किया जा सकता है।

इन्द्रिय विजय—आन्तर्शत्रु को उन्मादी बनाने की सहायक इन्द्रियां है इन्द्रियों के द्वारा ही आन्तर्शत्रु कार्य करते है। ये ही इन्द्रियां जब आत्मा का सहयोग करने लग जाती है, तब मोक्ष की ओर गति प्रारंभ हो जाती है। मोक्ष

की ओर गति न होने की दशा में हमेशा आन्तर्शत्रु का सहायक ही बनी रहती है। इसलिए शास्त्रकार अनुभवी महापुरुष कहते है कि सभी आपत्ति का मूल इन्द्रिय का असंयम है।

प्रत्येक इन्द्रिय अपने-अपने विषय में जीवात्मा को सब समय आकर्षित करके रखती है या प्रयत्नशील है। इन इन्द्रियों के कारण ही जीवात्मा अपना वास्तविक अस्तित्व भूलकर जीवन की आहुति दे देता है।

चक्षु— आँख का कार्य है देखना। अग्नि के रंग-बिरंगी ज्वाला को देखकर पतंगा अपने जीवन की आहुति दे देता है।

घ्राण— घ्राण अर्थात् नाक का कार्य है सुगन्ध या दुर्गन्ध का अनुभव करना। कमल के सुगन्ध से आकर्षित होकर अपने जीवन को समाप्त करता है।

रसना— रसना अर्थात् जीभ का कार्य है रस का आश्वादन करना। रसना के स्वाद में मछली काँटा में फँसकर जीवन को समाप्त करता है।

स्पर्श— चमड़ी, जो सुखद, दुःखद का अनुभव करता है। हाथी हाथिनी के संस्पर्श में आने के लोभ में पराधीन बनता है।

कर्ण— जिसका कार्य है सुनना। मधुर या कटु शब्द का अनुभव करता है कान। संगीत के सुरो से आकर्षित होकर हरिण जीवन को समाप्त करता है।

इस प्रकार एक-एक इन्द्रिय के प्रभाव से जीवात्मा जीवन को समाप्त कर देता है। अगर किसी जीवात्मा पर पाँचों इन्द्रियों का प्रभाव हो तो उसका सोचना ही क्या?

अतीत के पन्ने उलटने से पता लगता है कि ऐसे अनेक महान आत्मा शूरवीर हुए हैं जो इन्द्रिय के वश में पड़कर अपना अमूल्य जीवन ही नष्ट कर दिये है। इन्द्रियों के वश में आकर जीवन को नष्ट करने के सम्बन्धित विषय में जिनरक्षित और जिनपालित का दृष्टान्त जैन शास्त्र में पढ़ने को मिलता है।

जिनरक्षित–जिनपालित—जिनरक्षित और जिनपालित व्यापारी पुत्र थे। स्वतन्त्र व्यापार करने की इच्छा से दोनों भाई विदेश की यात्रा करने का निर्णय किया। व्यापार की सभी तैयारी करके शुभ दिन में माता-पिता का आशीर्वाद लेकर यात्रा प्रारंभ किये। दुर्भाग्य से समुद्र से दिशा भूलकर एक

अनजान द्वीप में जा पहुँचे। अपरिचित स्थान में इधर-उधर घूमते-घूमते एक यक्षिणी मिलन हो जाता है। यक्षिणी के मोहपाश में आकर दोनों भाई वहीं रूक जाते है और यक्षिणी से काम भोग में मग्न रहने लगे। काम भोग के मोह में इतना अधिक डूब गये कि अपना उद्देश्य ही भूल गये। एक बार देवी को कोई आवश्यक कार्य में कहीं जाना था। दोनों भाईयों को सूचित किया कि आप इस उपवन में स्वतन्त्र घूमे-फिरे आनन्द ले २/४ दिन में मैं आ जाऊँगी। पर दक्षिण दिशा में कभी भी न जावे। इतना कह कर देवी चली गई। दोनों आनन्द का उपभोग करने लगे। वे सोचने लगे हमें दक्षिण में जाने का निषेध किया गया है, वैसा क्या होगा वहाँ जो हमें नहीं जाना चाहिये। मनो विज्ञान का एक नियम है जिसका निषेध होता है उस ओर मन अधिक आकर्षित होता है। इस नियम के आधार पर वे दोनों अपनी इच्छा को रोक नहीं पाये और निषेधित दिशा में घिरे-घिरे आगे पढ़ने लगे। कुछ आगे बढ़ने पर एक बटवृक्ष में एक मरणासन्न व्यक्ति लटका हुआ देखा। उसे देखकर तो प्रथम दोनों घबरा गये। पर उससे पूछने पर दर्दभरी जानकारी मिली। उसने कहाँ.......भाई! मैं भी तुम जैसा ही इस राक्षसी के साथ काम में डूबा हुआ था। तुम्हारे आने से मेरी यह गति हुई है, और दूसरा कोई आते ही तुम्हारी भी वही गति होगी। यह परम्परा चलती आ रही है और चलती रहेगी। जिसका प्रमाण पास में पड़े हजारों नर कंकाल है। दोनों भाई तो भय से काँपने लगे। अब तो सुख की कल्पना भी काँटा जैसी चुभने लगी। बचने का उपाय पूछने पर जानकारी मिली कि पास के यक्ष मंदिर में प्रार्थना करने पर एक घोड़ा प्रगट होगा। उसमें सवार होकर आपकी जहाँ इच्छा होगी वहां पहुँचा देगा, पर उसकी एक शर्त है अगर भूल से भी देवी को पीछे मुड़कर देखा तो वहीं उछाल कर फेंक देगा। दोनों भाइयों ने सूचना अनुसार वही किया। यक्ष मंदिर में जाकर प्रार्थना की। प्रार्थना करते ही एक सुन्दर घोड़ा प्रगट हो गया। दोनों भाई उसमें सवार होते ही आकाश मार्ग में उड़ने लगे। इधर देवी को पता लगते ही इसके पीछे पड़ गई और प्रेमभाव से विनती करने लगी। आजीवन साथ रहने की बात करने लगी। जब कोई प्रभाव नहीं पड़ा तो देवी कहने लगी–आप इतने दिन यहाँ रहे, अब मुझे छोड़कर जा रहे है, कुछ नहीं तो एक बार स्नेह दृष्टि से देख तो ले। बहुत करने पर

जिनरक्षित मोह जाल में आ गया। एक बार देवी की ओर मुड़कर देखा। देखते ही अपने नियमानुसार घोड़े ने उसे नीचे गिरा दिया। देवी ने उसकी हत्या कर दी। दूसरा सुरक्षित अपने घर पहुँच गया।

जैन शास्त्र में लिखा है कि——

मन, वचन, काया वे तीन गुप्ति में

मन को काबू में रखना दुष्कर है।

गुत्तीणं मणगुत्ती

पाँच महाव्रत में ब्रह्मचर्य व्रत कठिन है।

वयाणं बंभं

आठ कर्म में मोहनीय कर्म खतरनाक है–

पाँच इन्द्रियों में रसेन्द्रिय इन्द्रिय का सरदार है– 'अकखाण रसणी।'

उपरोक्त चार सिद्धान्त का परस्पर सम्बन्ध भी सुन्दर है।

मन को स्थिर करने के लिये ब्रह्मचर्य का पालन अनिवार्य है।

ब्रह्मचर्य पालन करने के लिए मोहनीय कर्म पर अधिकार होना आवश्यक है। मोहनीय कर्म को जीतने के लिए पाँच इन्द्रियों पर नियंत्रण रखना अनिवार्य है। और पाँच इन्द्रियों पर संयम रखने के लिए रसना (जीभ) पर संयम अनिवार्य है।

जैन दर्शन में इन्द्रियों पर विजय प्राप्त करने के लिए उपवास का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है। उपवास न करने की शक्ति होने पर शरीर की रक्षा भावना से मात्र रूक्ष भोजन करने का विधान है। इसीलिए हमारे यहाँ आयंबिलव्रत का अत्यधिक महत्व है। अन्य दर्शन में भी रूक्ष भोजन करने का विशेष महत्व है।

रूक्ष भोजन पर एक कथा— अहमदाबाद में संत सरयुदास रहते थे। वे समर्थ विद्वान और त्यागी थे। उनका विचार उच्च कोटि के थे। उनके अनेक भक्त उनकी सेवा के लिए तत्पर रहते थे। एक भक्त के घर एक बार सभी संतों को भोजन करने का आमंत्रण दिया गया। अनेक संत महात्मा भक्त के घर भोजन करने के लिए पधारे। उदार भाव से संतों की भक्ति के लिए स्वादिष्ट लापसी तैयार कराया गया था। सभी संत महात्मा भोजन करने बैठ गये। सरयुदासजी कुछ देर से आये । वे अलग भोजन करने बैठ

गये। भोजन में मात्र सूखी रोटी ही लाने का निर्देश दिया। भक्त को बड़ा दुःख हुआ। वे तो आज भक्ति से संतों की सेवा गरिष्ट और स्वादिष्ट भोजन से कराना चाहते थे। इस स्थिति में मुख्य गुरु ही सूखी रोटी की मंगनी कर रहे है इससे दुःख होना स्वाभाविक था। संत सरयुदास तो अनुभवी थे भक्त को दुःखी होते देखकर कुछ उत्तर नहीं दिये। एक काँच (आयना) मंगवा कर, उसमें लापसी लगाकर भक्त को इसमें मुंह देखने के लिये कहे, पर भक्त काँच की ओर देखकर बोला......गुरुजी! इसमें तो कुछ भी नहीं दिखता है। संतजी एक रूखी रोटी लेकर आयना में घीस दिये फिर बोले अब देखो? अब आयना साफ था और स्पष्ट दिखता था। ये घटनायें तो घट रही थी पर कोई कुछ भी समझ नहीं पाये थे। संतजी सभी को उद्देश्य करके बोले जिस आत्मार्थी व्यक्ति को आत्म दर्शन करना है, उसके लिए रूक्षभोजन करना ही हितावह है। जिससे हम अपने चित्त के दोषों को देख सकते है।

इन्द्रियों को विविध साधना या संयम की प्रक्रिया से नियंत्रित किया जा सकता है। कभी-कभी इन इन्द्रियों को दमन नीति द्वारा भी नियंत्रित करने का विधान बताया गया है। ज्ञान मार्ग से अगर वे इन्द्रियाँ शांत न हो तो दमन मार्ग से ही इन्हें नियंत्रण करना फलदायी है।

इन्द्रिय दमन पर एक दृष्टान्त—एक राजा थे। उनका नाम नरदेव था। राजा प्रजावात्सल्य और हास्यप्रिय था। हास्य के माध्यम से राजा कभी प्रजा को मनोरंजन कराते थे तो कभी कार्यसिद्ध करते थे या फिर कभी प्रजा को नीतिकी शिक्षा भी देते थे। इस प्रवृत्ति से सभी प्रजा राज्य के एक-एक कार्यक्रम में बड़े उत्साह से भाग लेते थे।

राजा एक बार दरबार में प्रजा को मनोरंजन के साथ नीतिशिक्षा देने के लिये एक प्रस्ताव रखा। अगर कोई व्यक्ति कुछ भी न खाय तो उसे एक हजार सुवर्ण मुद्रा इनाम में दिया जायेगा।

इस बात को सुनने के बाद बहुत सारे लोगों ने अपनी बकरी को भरपेट खिल-पिलाकर राजा के सामने रखा। पर अपने स्वभाव के अनुरूप राजा के सामने रखे खाने पर बकरी अवश्य ही मुँह डालती।

एक व्यक्ति आठ दिन तक बकरी के सामने खाना रखकर, जब भी

बकरी खाने लगे डंडे से मारते रहे। मार के भय से बकरी खाना ही भूल गयी। अब तो उसके सामने खाना कितना ही क्यों न हो मालिक सामने डंडा लेकर खड़ा रहने से खाना में मुंह नहीं डालती थी। आठ दिन के बाद दरबार में बकरी लायी गयी। डंडा के भय से बकरी राजा के सामने खाने में मुंह नहीं डाली। व्यक्ति को इनाम मिल गया।

इसी प्रकार दमन से इन्द्रियों को वश में किया जा सकता है।

मन, बुद्ध, आत्मा ये आन्तरिक पदार्थ है। इन्द्रियां बाह्य पदार्थ है। इन्द्रियों द्वारा ही मन कार्यशील होता है।

काया शुद्धि से मन शुद्धि होती है।

मन शुद्धि से मोक्ष की प्राप्ति होती है।

छः आन्तर्शत्रु और पाँच इन्द्रिय के बीच मन ही दलाल का कार्य करता है। इसीलिए मन को मन्त्री कहा जाता है। योगाचार्य पातंजलि लिखते है—

मन एव कारणं संसार बन्धमोधयोः

मन ही संसार में बन्धन और मुक्ति का कारण है।

कालदेश के दो गुण—(१) देशाचर पालन। (२) आदेशकाल आचरण त्याग।

देशाचर पालन— महाजनों येन गतः सः पन्थाः। आर्य देश के अनुभवी विशिष्ट महापुरुष जिस मार्ग पर चलते है वही वास्तविक आचरणीय मार्ग है। वही उत्कृष्ट आचार मार्ग का हम सभी को अनुसरण करना चाहिए। पूर्व काल से जो प्राचीन सामाजिक नियम चला आ रहा है, उनका उपहास न करें एवं बिना बिचारे उनका त्याग करना अनुचित हैं। उन नियमों में अनेक मर्यादा की नीति भरी है। जैसे-बहु को माथे में कपड़ा डालना, यह प्रवृत्ति मात्र में रुढ़ीवादी कह देना उचित नहीं है। इससे घर की अनेक व्यवस्था बनी रहती है। एक दूसरे की मर्यादा रखने से कलह का कारण कम बनता है। आज के समय में यह प्रथा कम होने से नई बहु घर में प्रवेश करते ही आमने सामने बोलने लग जाती है। परिणाम स्वरूप परिवार में बिखराव की स्थिति खड़ी हो जाती है आज की नई विचार धारा भारतीय संस्कृति को ध्वस्त करने का एक सुनियोजित षड़यन्त्र है। समय के साथ जीवन में परिवर्तन करना

चाहिए, पर ऐसा कोई मूल सिद्धान्त का परिवर्तन नहीं करना चाहिए, जिससे समाज में दुर्गुण, स्वच्छन्दता का प्रमाण बढ़े।

स्वतन्त्र होना हितकारी है, पर स्वच्छन्द कलंक है।

महात्मा गान्धी ने हिन्द स्वराज में एक स्थान पर लिखा था हमारी परंपरागत मूल्यों पर कोई संशोधन करने का प्रयास न करें, क्यों कि हमारे वे मूल्य नीति और इन्द्रिय निग्रह पर निर्भर है। आज के कथित सुधारक के संशोधन नीति और इन्द्रिय निग्रह हीन है, ऐसे सुधारक को मैं काला नाग समझता हूँ।

एक अन्य स्थान पर गान्धी जी लिखते है हो सकता है आज के संशोधन से प्रथम लाभ दिखता हो, पर दूरगामी परिणाम तो हानि कारकही है।

ओल्ड इज गोल्ड मानकर प्राचीन परम्परा को हम स्वीकार करें।

आज हम अनुभव कर रहे है कि विकशित देश प्राचीन परम्परा की ओर आकर्षित हो रहे है। आज वे लोग प्राचीन भारतीय जीवन पद्धति को स्वीकार कर रहे है। सब दुर्भाग्य की बात है कि हम उस त्याज्य पदार्थ के ऊपर आकर्षित होकर उन्हें पाने के लिए प्रयत्न कर रहे है।

आज सरकार प्रजा की मूल परम्परा में घर-घर गाय रखने की परम्परा को तोड़कर शुद्ध दूध, गोबर, गोमूत्र आदि से वंचित रखकर डेरी, फारटिलाइजर आदि देकर प्रजा के सत्व को नाश कर रही है।

आर्यदेश की प्रसिद्ध लौकिक आचार परम्परा—

—अतिथि का सत्कार करना।

—अतिथि, साधु, संत को सादर उचित भोजन कराना।

—समय और शक्ति के अनुसार उचित वस्त्र पहनना।

—दुष्काल प्राकृतिक प्रकोप ग्रसित दीन दुःखी का यथोचित सहयोग करना।

—देखा देखी करके व्यर्थ प्रदर्शन करके धन का अपव्यय नहीं करना।

—सामाजिक समारोह में अपनी शक्ति से भी अधिक खर्च करके या अपनी शक्ति होनेपर समाज की मर्यादा भंग करके खर्च करके प्रदर्शन या धन का अपव्यय नहीं करना।

—व्यर्थ अपव्ययी जीवन न बनाना।

—एकल पेटा न बनना। अर्थात कोई भी सुविधा स्वयं अकेला भोगने की भावना नहीं रखना।

—धर्महीन आचरण नहीं करना।

शास्त्र में लिखा है कि भोजन कराने से बड़ा और कोई पुण्य नहीं है। ऐसे पुण्य कार्य में किये गये खर्च का अपूर्व महत्व है। ऐसे कार्य के निष्पति में जो आनन्द मिलता है, वह कहीं भी संभव नहीं है।

वस्त्र भी वैसे पहने जिससे अन्य कोई भी व्यक्ति को कष्ट या विचार न हो। आज के भौतिकवादी व्यक्ति अपना धन या अहंकार को प्रदर्शित करने के लिए, या फिर काम वासना को प्रदर्शित करने के लिए अनुचित, असभ्य वस्त्र पहनते है। वस्त्र पहनते समय अपनी इच्छा के साथ-साथ अन्य की भावना को भी स्थान देना चाहिये।

यवन बादशाह औरंगजेब एक बार आराम खंड में बैठकर कुरान पढ़ रहा था। उसी समय उनकी लड़की ढाका का मलमल पहनकर बादशाह के पास आकर खड़ी हो गई। वस्त्र इतना पारदर्शक था कि शाहजादी का अंगोपांग दिख रहा था। बादशाह ने शाहजादी पर नजर पड़ते ही मुंह फेर लिया और अंगरक्षक को आदेश दिया कि जाओ इस कुलक्षणी स्त्री को आँख के सामने से तुरन्त दूर हटाओ।

क्रमशः

श्रीचन्द्रराज चरित्र

कुछ दूर आगे बढ़ने पर वह छाया सघन वृक्षों में लोप हो गई। बस कुमार वहीं ठहर गया। जब सुबह हुआ और उजाला चारों तरफ फैल गया तब उसके पद चिन्हों को देखता हुआ कुमार उन्हीं के सहारे आगे बढ़ने लगा। चलते-चलते वह एक बड़े पहाड़ की गुफा पर पहुँचा। उसका मुँह एक बहुत बड़े शिलाखंड से ढंका हुआ था। कुमार ने उस पदपंक्ति को गुफा के भीतर जाते हुए देखा पर बाहर वापस निकले हुए चिह्न दिखाई नहीं पड़े। अतः बुद्धिमान् कुमार ने उस पुरुष के भीतर होने का अनुमान किया। उस स्थान से नजदीक ही एक बावड़ी के तट पर लगे हुए एक पेड़ की खोखल में जाकर कुमार बैठ गया। वहीं पर उसने कुछ फलाहार कर, जल-पान करके अपनी जठराग्नि को शान्त किया।

कुमार दिन भर उस गुफा की ओर ध्यान लगाए उस पेड़ की खोखल में बैठा रहा। फिर भी कोई मनुष्य उसमें से निकलता हुआ नजर नहीं आया। तीसरे पहर में एक मनुष्य शिला-खण्ड को हटा कर गुफा में से निकला और बावड़ी पर आया। वहां पर उसने अपने हाथ मुंह धोकर जल पिया, और हाथ में लाए हुए बर्तन को पानी से भर कर पुनः गुफा में प्रविष्ट हो गया। थोड़ी देर बाद वह फिर गुफा से निकला, तथा गुफा के मुंह को शिलाखण्ड से बंद करके बावड़ी पर आया। घुमैले वस्त्र पहने मुंह से पान चबाता हुआ, अस्त्र-शस्त्र से सुसज्जित वह नवयुवक बहुत ही सुन्दर प्रतीत हो रहा था। उसने बावड़ी के पानी से खूब कुल्ले किये और एक गुटिका को मुंह में रखा। गुटिका के प्रभाव से वह पहले की तरह अदृश्य हो गया और नगर की ओर चला।

कुमार इन सब बातों को बड़ी ही सावधानी से देख रहा था। उस सिद्ध पुरुष के वहां से चले जाने पर कुमार बाहर निकला और उसने धूप में उसकी छाया को नगर की ओर जाते देखा। थोड़ी देर बाद जब कुमार को उस के बहुत दूर निकल जाने का विश्वास हो गया, तो वह शीघ्र ही उस पर्वत कन्दरा के पास आया और बड़ी मुश्किल से उस शिलाखण्ड को दूर किया। एवं उस गुफा में प्रविष्ट हुआ।

वह बड़ी निर्भयता से उसमें आगे बढ़ता जा रहा था। थोड़ी दूर चलने के बाद उसे एक सुन्दर विशाल भवन दिखाई पड़ा। वह तुरन्त उसमें घुस गया। वहां का वैभव तथा धनको देखकर वह चकित सा रह गया। कुछ आगे बढ़ने पर मकान के मध्य भाग में एक रत्न जड़ित पलंग पर बैठी हुई एक प्रौढ़ युवती उसे दिखाई पड़ी। उसने उस स्त्री को बड़ी हमदर्दी के साथ पूछा:- हे बहिन! तुम कौन हो? और यहां अकेली कैसे रहती हो?

कुमार के प्रश्न को सुनते ही उसकी आंखों में पानी भर आया और वह गद्-गद् स्वर में बोली-हे भाई! सुनो, नायक-नाम के नगर में बहुत से ब्राह्मण-व्यापारी रहते हैं। वहां राजा भी ब्राह्मण तथा अधिकारी वर्ग भी ब्राह्मण हैं। वह गांव ही ब्राह्मणों का है। वहां के मन्त्री रविदत्त ब्राह्मण की मैं विवाहिता स्त्री हूँ। मेरा नाम शिवमती है। मेरे यहां आने की कथा मैं तुम्हें सुनाती हूँ सो आप ध्यान देकर सुनियें।

हमारा नायक नगर धन धान्य से परिपूर्ण है। बड़े-बड़े धनाढ्य अपने निवास से उसे अलंकृत कर रहे हैं। ऊंची-ऊंची अट्टालिकाएं और चौड़े-चौड़े एक पंक्ति में बने हुए बाजार उसकी शोभा को बढ़ा रहे हैं। वह नगर व्यापार का बड़ा भारी केन्द्र है, लेकिन वहां पर बड़ी ही अराजकता फैली हुई है। चोरियों का जोर वहां पर दिन प्रति दिन बढ़ता ही जा रहा है। इस कारण लोग वहां बड़े ही दुःखी हो रहे हैं। एक दिन सबने मिलकर राजा से प्रार्थना की कि या तो आप हमारे जान मालकी रक्षा कीजिए या हमें नाहीं कह दीजिए जिससे हम आपके भरोसे न रह कर अपने बड़े स्वामी कुशस्थल के महाराज से अपनी रक्षा की प्रार्थना करें।

प्रजा का उपालभ्भ सुनकर राजा बहुत डरा। बड़े सत्कार के साथ उसने प्रजा-जनों को उनकी रक्षा का आश्वासन दिया। उसी वख्त राजाने सिपाहियों को भेज कर नगर रक्षक को बुलाया और खूब फटकारा।

नगर रक्षक ने निवेदन किया स्वामी! वह कोई सिद्ध चोर है। अतः नगर के रक्षकों को दिखाई नहीं देता है, फिर भी मैं आज से उसे पकड़ने का भरसक प्रयत्न करूंगा।

इतना कहकर वह नगर रक्षक चला आया और प्रजाजन भी आश्वासन मिलजाने पर सन्तुष्ट होकर अपने अपने घर चले गये। रात्रि में नगर रक्षक

ने बड़ी सावधानी के साथ पहरा दिया, और अपने सेवकों को कड़े पहरे पर लगा दिया, पर वह चोर उसे कहीं पर भी नहीं मिला।

चोर को नगर रक्षक की प्रतिज्ञा किसी तरह मालूम पड़ गई तथा उसने उसी के घर में चोरी की और चलता बना। इसी तरह उसके बाद जिसने भी उसे गिरफ्तार करने का बीड़ा उठाया उसकी दशा उस नगर-रक्षक के समान हुई। अन्त में मेरे पति रविदत्त ने अपने घर को खाली करके अपना माल असबाब दूसरों के घर में गुप्त रीति से रखकर फिर उस चोर को पकड़ने की प्रतिज्ञा की। मेरे पति ने तमाम रात उस चोर की प्रतिक्षा की। मगर वह उनके हाथ नहीं आया। जब चोर को इस बात का पता लगा कि मेरे पति ने उसे पकड़ने का बीड़ा उठाया है तो वह रात्रि में मेरे घर आया परन्तु किसी प्रकार का माल असबाब तो उसके हाथ न लगा। तो वह क्रोधित होकर मेरे पास आया और मेरे हाथ पैर बांधकर एवं मुंह में वस्त्र ठूँस कर मुझे यहां ले आया।

मुझे उसने अपना नाम रत्नाकर चोर बताया है। वह प्रतिदिन कभी साक्षात् तथा कभी अदृश्य होकर इस समय जाता है, और पौ फटने पर वापस लौट आता है। हे भाई! मुझे यहां आये तीन दिन हो गये हैं मैं बहुत ही दुःखी हूँ। मुझे अपने पति तथा बच्चों का वियोग दिन रात सताता है। न जाने मेरे दूध मुंहे बच्चों का क्या हुआ होगा?

हे भाई! आप कौन हैं? और यहां किस कारण से आये हैं? मुझे तो ऐसा भान होता है कि मेरा भाग्य ही आप को यहां खींच लाया है।

कुमार ने उसका हाल सुनकर कहा बहिन! मैं तो कोई राह चलता कार्पटिक हूँ। धैर्य रक्खो। मैं तुम्हे अवश्य इस दुःख से छुड़ाने की कोशिश करूंगा।

यह सुन शिवमती ने कहा– भाई! कृपा करके आप मुझे इस पापी के हाथ से छुड़ा कर मेरे निवास स्थान नायक-नगर में पहुँचा दें, तो ऐसा करने पर आपको गुप्ति और मुक्ति का फल प्राप्त होगा। मेरी प्राण रक्षा होगी तथा मेरे बच्चों से मेरा मिलाप हो जायगा और मैं और बच्चे आपको यावज्जीवन आशीर्वाद देते रहेंगे।

उसकी करुणा भरी कथा को सुनकर कुमार का हृदय पिघल गया। उसने उस ब्राह्मणी–शिवमती को अपने साथ लिया और गुफा के द्वार से

बाहर निकल कर उस शिला से तथा एक और दूसरी बड़ी शिला से गुफा के मुंह को ढॉक दिया फिर वे दोनों वहां से नायकपुर की ओर चले। कुछ घंटों में ही वे दोनों नायकपुर पहुंच गये। नगर में पहुंचकर कुमार ने शिवमती को उसने घर ले जाकर उसके पति को सौंप दिया। उसके पति रविदत्त ने कुमार का बहुत आभार माना। उसके तमाम कुटुम्बियों ने कुमार का बड़ा आदर सत्कार किया। शिवमती तरह-तरह के वस्त्राभूषण लाकर कुमार को देने लगी, पर कुमार ने कुछ भी लेना स्वीकार नहीं किया अन्त में आग्रह पूर्वक शिवमती ने कुमार को स्मृति-चिन्ह के रूप में एक अंगूठी दी जिसे कुमार ने बड़े आदर के साथ स्वीकार की। इसके पश्चात् पुनः कुमार उस चोर के निवास स्थान के पासकी बावड़ी के पास लौट आया और बैठ गया।

पहलेवाले पेड़ के नीचे वह जाकर बैठा ही था, कि वह चोर भी इसी दरमियान कुमार के पास आकर बैठ गया। परिचय पूछने पर कुमार ने अपना नाम लक्ष्मीचन्द्र तथा चोर ने अपना नाम रत्नाकर बतलाया।

यह चोर मुझे द्वार खोलने के लिए कहे इसी आशय से कुमार ने उससे पूछा कि हे मित्र! तुम इतने उदास क्यों दिखाई पड़ रहे हो। ज्यों ही वह कुछ जबाव देने वाला था कि पांच पथिक एक ओर से आ निकले, और वहीं उसी पेड़ के नीचे बैठ कर विश्राम करने लगे। कुमार की दृष्टि चोर की पगड़ी में बंधी हुई गुटिका पर पड़ी और उसे प्राप्त करने की नीयत से कुमार ने पांचों पथिकों के सामने उस चोर से कहा कि—मैं तुम्हारी और मेरी पगड़ी को एक शिला के नीचे दबा देता हूँ। हम दोनों में से जो कोई भी शिला के नीचे से निकाल लेगा वहीं दोनों का स्वामी होगा।

कुमार की पगड़ी में सोना बँधा हुआ देखकर चोर के मुंह में पानी भर आया और उसने फौरन उस शर्त को स्वीकार कर ली। कुमार ने एक बड़ी भारी शिला के नीचे दोनों की पगड़ियों को दबा कर रखदी। सर्वप्रथम उस चोर ने पगड़ियों को निकालने की बहुत कोशिश की पर वह न निकाल सका। दूसरों ने भी पगड़ियों को निकालने की कोशिश की पर वे भी असफल रहे तथा चोर और वे हार कर बैठ गये।

उपस्थिति मनुष्यों में से एक के पास से कुमार ने कुछ पके हुए आम खरीदकर सबको खाने के लिए बांट दिये। चोर मन में विचार कर रहा था कि यह मनुष्य बड़ा बलवान मालुम पड़ता है यह मेरी गुफा का दरवाजा

खोल सकता है क्योंकि कुमार ने जो दूसरा बड़ा पत्थर उसकी गुफा के मुंह पर लगा दिया था वह चोर से नहीं हिल सका और वह हार कर वहीं आकर कुमार के पास बैठ गया था। बेचारा अपने घर में घुसने से भी वंचित हो गया था।

इतने में नायकपुर के रास्ते में से बाजों की आवाज सुनाई पड़ी। सबने यही कहा कि निश्चय ही राजा भृगु की सेना इधर आ रही है। वह चोर और वे पाचों पथिक वहां से नौ दो ग्यारह हो गये।

वहां पर एकान्त हो जाने के बाद कुमार ने उठकर उस शिला के नीचे से वे दोनों पगड़ियां निकाल ली। गुटिका लेकर कुमार ने अपने मुंह में रख ली और अदृश्य होकर पेड़ पर चढ़कर बैठ गया।

इतने राजा भृगु की सेना वहां आ पहुँची खोजियों ने पैरों के निशान खोजने शुरू किया। अन्त में खोज करने के बाद उन्होंने राजा से कहा— राजन्! यहां तक तो पदचिह्न मिलते हैं पर इस स्थान से आगे तो दिखाई नहीं पड़ते। राजा ने फौरन मंत्री को हुक्म दिया कि जल्दी से उस दुष्ट का पता लगाओ। वह यहीं कहीं छिपा हुआ मालूम पड़ता है।

जो आज्ञा कहकर मंत्री ने सिपाहियों को पता लगाने के लिये आदेश दिया। सिपाहियों ने आसपास के जंगल, पेड़, गुफाएँ, खोखल तथा नदी तालाब सब कुछ छान डाले पर उस चोर का कहीं पर भी पता न चला। अन्त में निराश होकर रात में वह सेना अपने नगर को वापस लौट गई।

कुमार श्रीचन्द्र भी उस पेड़ से नीचे उतर कर इच्छित दिशा की ओर रवाना हुआ। पूर्व जन्म में किये हुए पुण्य के प्रभाव से सारी सम्पतियां उसे प्राप्त थी। गुटिका के प्रभाव से मुश्किल से मुश्किल काम भी आसानी से पूर्ण होते थे। एक दिन विश्राम के लिये किसी मुसाफिर खानें में वह ठहरा हुआ था। तब वहां बहुत से पथिक ठहरे हुए थे। कुमार उनके वर्त्तालाप को सुन रहा था कि—एक वैतालिक—चारण ने गाना शुरू किया—

कुशस्थल नगर के स्वामी महाराजा-प्रतापसिंह के कुल में चन्द्रमा के जैसे, महारानी श्री सूर्यवतीजी के पुत्र श्री चन्द्रकुमार की संसार में जय हो। राधावेध की साधना से तिलकपुर की राजकन्या तिलकमंजरी ने जिसे स्वयंवर मण्डप में वरमाला पहिना दी। ऐसे सब राजाओं के गर्व को हरण करने वाले सुभटशिरोमणि कुमार श्री चन्द्र की जय हो। सिंहपुर के स्वामी

श्री शुभगांग राजा की पद्मिनी कन्या श्रीमती चन्द्रकला ने पूर्व-भव के स्नेह से प्रेरित हो जिससे ब्याह किया ऐसे श्री चन्द्रकुमार की जय हो।

इस गीत को सुनकर एक पथिक बोला अरे भाई! तुमने तो अनर्थ कर डाला। वह श्रीचन्द्र कुमार तो सेठ का पुत्र है उसे राजपुत्र कैसे बता रहे हो। यह सुन बैतालिक ने कहा-भाई! सुनो जब मैं कुशस्थल में था, तभी पद्मिनी चन्द्रकला विवाहित होकर आई थीं। कुमार ने वीणारव को मुंहमांगा दान रथ और घोड़ों को दिया था। एक दिन तिलकपुर के मंत्री धीरने महाराजा प्रताप सिंह से तिलक मंजरी को ब्याहने के लिये कुमार श्रीचन्द्र को भेजने के लिए निवदन किया था। उसी रोज कुमार गुप्त रीति से कहीं चला गया। खोज शुरू है, मगर वह नहीं मिला है। एक दिन वहां एक ज्ञानी गुरु का आगमन हुआ था। राजा रानी, सेठ सेठानी आदि सभी दर्शन करने के लिये गुरु के पास पहुंचे थे, गुरुजी ने धर्मोपदेश दिया था। महारानी सूर्यवती ने अपने पुत्र के लिये गुरु महाराज से पूछा था। ज्ञानी गुरु ने कुमार श्रीचन्द्र को उनको अपना अंगज पुत्र बताया था और सेठ सेठानी पालक माता-पिता ही हैं ऐसा फरमाया था। उन्हीं ज्ञानी गुरु ने फरमाया है कि श्रीचन्द्र कुमार अभी इन दिनों विदेश में विचर रहा है। वह एक ही वर्ष में राजाधिराज होकर तुम्हें आ मिलेगा। कुशस्थलपुर में यह बात सुन राजा रानी आदि सब बड़े प्रसन्न हुए तथा अपने-अपने घर चले गये। मैंने भी वहां पर इन गाथाओं को उन्हें सुनाया, और जो कुछ भी धन मिला, उसे लेकर इस समय मैं अपने घर जा रहा हूं।

यह बात सुनकर कुमार को अत्यन्त हर्ष हुआ। कुमार ने उस वैतालिक को यथेष्ट दान देकर सन्तुष्ट किया, तथा अन्य उपस्थित मनुष्यों को मिष्टान्न भोजन कराया। इसके बाद वह उसी वेश से फिर आगे चला। कभी वह प्रकट रूप से चलता था, तो कभी अदृश्य होकर।

एक दिन कुमार को चलते-चलते शाम हो गई। एक भयावने जंगल के पास वह आ पहुँचा। वहां ठहरने का कोई स्थान न होने से वह एक बहुत बड़े पेड़ के नीचे ठहर गया। वह पेड़ तोतों का निवास स्थान था। शाम को सभी तोते अपना चुग्गा करके चारों ओर से वहां एकत्रित हो गये। वे आपस में बातें पूछने लगे। कौन कहां से आया है? और किसने क्या देखा हैं? इस प्रकार प्रश्न होने पर, एक बड़े तोते ने जो कि वहां तीन दिन बाद आया था-

– उसको सबने पूछा–बाबा! तुम इतने दिन कहां थे? क्या कोई आश्चर्य देखा? उसने उत्तर दिया–बच्चों! यहां से पूर्व की ओर महेन्द्रपुर नामका एक सुन्दर नगर है। वहां का स्वामी त्रिलोचन नाम का राजा है, और उसके गुणसुन्दरी नाम की रानी है। सुलोचना नाम की जन्म से अन्धी उनके एक पुत्री है। वह इस समय युवावस्था को प्राप्त हो चुकी है। चौंसठ कलाओं में वह निपुण है। उसके हृदय–रूप नेत्र खुले हुए हैं। इसलिए वह अद्‌भुत काम भी कर लेती है। एवं कविताएं भी बना लेती है।

एक दिन राजा ने उसके वर की चिंता की। अन्धी को कौन परणे और इसकी आंखें कैसे ठीक हो? मंत्री से इसका परामर्श किया। राजा ने अपने राज्य में ढिंढोरा पिटवाया कि जो कोई इसे दृष्टि प्रदान करेगा उसे मैं अपना आधा राज्य दूंगा। उसके साथ इस कन्या का विवाह कर दूंगा पांच मास व्यतीत हो गये, फिर भी दृष्टि प्रदान करने वाला अभीतक कोई नहीं मिला। यह सुन, छोटे बच्चों ने पूछा–बाबा! क्या कहीं कोई ऐसी दवा है? जो अन्धे को दृष्टि प्रदान कर सके।

बूढ़े तोते ने उत्तर दिया–बच्चों? यह दवा किसी भयानक जंगल में ही मिल सकती है। यहां पर भी मिल सकती है लेकिन यह जड़ी बड़ी गोपनीय है। मैं यह बात तुम्हें नहीं बता सकता क्योंकि तुम अभी बच्चे हो। इस पर बच्चों ने बहुत ज्यादा आग्रह किया। आखिरकार मजबूर होकर बूढ़े को बताना ही पड़ा–प्यारे बच्चों! इसी पेड़ की जड़ में बड़े भारी प्रभाव वाली दो लताएं हैं, उनमें से एक मृत संजीवनी है और दूसरी क्षत-संरोहिणी नामकी गुणसंपन्न औषधि है। पहली लता जो कि बड़े-बड़े पत्तों वाली है वह शस्त्रों के घावों को फौरन मिटा सकती है। तोते की बात को सुन नीचे बैठा हुआ परोपकारी कुमार उठा और उन दोनों औषधियों को लेकर पूर्व दिशा की ओर चल पड़ा।

उस विस्तृत जंगल को पार करने में कुमार को तीन दिन लगे। चौथे दिन वह एक उजड़े हुए प्रदेश में जा पहुँचा। वहां बाग-बगीचों, तालाबों, बावड़ियों, दुकानों और ऊंचे मकानों की पंक्तियां लग रही थी, मगर मनुष्य और पशुओं का वहां नामोनिशान नहीं था। चारों ओर ऊंचे परकोटे से घिरा हुआ वह प्रदेश, बाहर से और अन्दर से सब जगह सुनसान दिखाई देता था। आश्चर्य चकित होकर कुमार ज्यों ही उसमें प्रवेश करने लगा त्यों ही एक

सारिका ने कुमार को अन्दर घुसने से मना किया। कुमार ने रोकने का कारण पूछा तो सारिका बोली—हे भाई! इस नगर में घुसने वालों को अपने प्राणों से हाथ धोना पड़ता है इसीलिए मैंने तुम्हें रोका है।

कुमार ने पूछा—मैंना! इस नगर प्रदेश का क्या नाम है? यह शून्य क्यों है? प्राणों से हाथ क्यों धोना पड़ेगा? क्या ये सब बातें बताओगी?

सारिका ने कहा—क्यों नहीं? सुनो—इस प्रदेश का नाम कुण्डलाचल है इस नगर का नाम कुण्डलपुर है। यहां अर्जुन नाम का राजा राज्य करता था। इसके पांच रानियां थीं जिनमें सुरसुन्दरी मुख्य थी। यहां लगभग महीनें में चार पांच चोरियां हो जाती थी। राजा और नगर रक्षक सभी उस चोर की खोज में लगे हुए थे। एक बार उस राजाने रात में चुराये हुए धन को लेकर भागते हुए उस चोर को देखा। राजा ने गुप्त-रूप से उसका पीछा किया मगर चोर को इस बात का पता चल गया और वह राजा को धोखा देकर नगर के बाहर एक मठ में जा घुसा। वहां सोये हुए एक सन्यासी के पास उसी के कपड़ों में चुराया हुआ धन रखकर वह चोर नौ दो ग्यारह हो गया। राजा ढूंढ़ता हुआ उसी मठ में जा पहुँचा। सन्यासी को चोर समझकर खूब फटकारते हुए वस्त्रों की तलाशी ली। उनमें से वह चोर का रखा हुआ धन भी निकल पड़ा। इस कारण राजा ने निरपराध सन्यासी को ही चोर समझकर गिरफ्तार कर लिया और इतनी सजा दी कि वह मर गया।

इस प्रकार वह सन्यासी मर कर प्रेत-योनि में राक्षस हो गया। उसने पूर्वजन्म को स्मरण करके राजा पर बड़ा क्रोध किया। क्रोध में आकर उसने राजा को मार डाला इसके बाद नगर के सभी मनुष्यों तथा पशुओं तक को सताने लगा। इससे तंग आकर नगर के मनुष्यों और सब जीव जन्तु यहां से भाग गये, और यह सारा नगर उजड़ गया। राक्षस ने रानियों का कुछ नहीं बिगाड़ा। रानी गुणवती गर्भवती थी। राक्षस ने सोचा था कि अगर इस रानी के पुत्र होगा तो उसे मैं मार दूंगा। भाग्य से पुत्री ही उत्पन्न हुई और उसका नाम चन्द्रमुखी रखा गया। मालुम नहीं अब उसका क्या भविष्य है?

हे पुरुषोत्तम! नगर में जो कोई भी जाता है, राक्षस उसे क्रोध में आकर मार डालता है। इसीलिए मैं तुम्हें भी जाने से रोकती हूँ। यह सब सुनकर भी वीरवर कुमार श्रीचन्द्र ने नगर में प्रवेश कर ही लिया। वह शून्य बाजारों को देखता हुआ राजमहल के पास जा पहुँचा। उसने राजमहल की

ओर दृष्टि डाली। झरोखों में बैठी हुई रानियों को देखकर वह राजसभा में आया। वहां पर घूमते हुए उसने कोमल बिछौने वाले एक सुन्दर पलंग को देखा। यही राक्षस की शय्या होगी, ऐसी समझकर अपनी थकावट को दूर करने के लिए, अपनी अंगरक्षा करके वह उस पर सो गया।

इधर वह राक्षस राजमार्ग में पुरुष के पदचिह्नों को देखकर बड़ा कुपित हुआ और शीघ्र ही वहां आ पहुँचा। अपनी शय्या पर सोये हुए कुमार को देखकर वह अत्यन्त विस्मित और क्रोधित होकर विचारने लगा–यह अत्यन्त तेजस्वी, शूरवीर, धैर्यवान् पुरुष कौन है? कहां से आया है? यह बड़ा ही निर्भय प्रतीत होता है, जो मेरी शय्या पर भी इस शान्ति और धीरता के साथ सो रहा है। क्या मैं इसे उठाकर समुद्र में डाल दूँ? या इसे तलवार से काट दूं? अथवा गदा से चूर-चूर कर डालूँ?

इस प्रकार विचार करते हुए उस राक्षस ने क्रोध में आकर कुमार को ललकारा–अरे! तू कौन है? गीदड़ होकर शेर के स्थान पर कैसे सोता है? उठ! जल्दी से उठ!! दुष्ट! तुझे मेरा जरा भी डर नहीं है क्या?

राक्षस की इस तर्जना को सुनकर निर्भीक कुमार उठा और बोला-अरे असुर! तूने मुझे नींद से क्यों जगाया है? इन लाल लाल आंखों से तू किसे डराता है? मैं तेरे घमंड को अभी चूर-चूर कर दूँगा। इतने दुराचार और क्रूर कर्म करके भी अभी क्या तू तृप्त नहीं हुआ? जो तू मेरी सुखनिद्रा को भंग कर रहा है एवं इन सती रानियों को तूने कैद कर रखा है। अगर तुझे यहां जिन्दा रहना है? तो तू अभी भी कहीं चला जा। मैं तुझे मारने में भी अपना गौरव नहीं समझता हूँ। अतः तू जा! चला जा!!

इस प्रकार कुमार के वचन सुनकर राक्षस हक्का-बक्का हो गया। कुमार के पुण्य से हतप्रत होकर, राक्षस शान्तवृत्ति से कहने लगा–हे साहसी! मैं तुम्हारे बल और पराक्रम से अत्यन्त प्रसन्न हूँ। अतः तुम मुझसे कुछ मांगो।

क्रमशः

संकलन-

स्वीकार नहीं वह हमारी नहीं

एक फकीर अपने शिष्य के साथ एक गांव में पहुंचा। फकीर को गांव में देख एक नास्तिक प्रवृत्ति के व्यक्ति के दिल में इनके प्रति घृणा व्याप्त हो गया। इसने फकीर और उसके शिष्य को गालियां बकनी शुरू कर दी। गालियां भी इतनी बेहुदी कि सुनने वाले को भी स्वतः ही क्रोध आ जाय। लेकिन फकीर शान्त मुद्रा में अपनी राह चलते रहे।

फकीर को गालियों पर गालियाँ बकने वाले व्यक्ति के प्रति फकीर के शिष्य को बड़ा क्रोध आया और अपने गुरू से बोला–गुरूदेव! यदि आप आज्ञा दे तो मैं गाली बकने वाले व्यक्ति को एक क्षण में ठीक कर दूं।

फकीर ने अपने शिष्य की बात सुनी अनसुनी करते हुए कहा-तुम्हे इस व्यक्ति की तरफ ध्यान नहीं देना चाहिये और अपनी राह चलते रहो।

फकीर और उनका शिष्य इस की सीमा को पीछे छोड़कर अन्य गांव में पहुंच गये। इस गांव में पहुंचते ही एक व्यक्ति फकीर एवं उनके शिष्य को गांव में आया देख खूब आदर भाव से भक्ति करने लगा। गुरू एवं धर्म पर श्रद्धा रखने वाले व्यक्ति की भक्ति देखकर फकीर बड़े ही प्रसन्न हुए। व्यक्ति बोला–बाबा! आज मेरे पुत्र का जन्म दिन है। जिसकी खुशी में मैंने अपने सगे-सम्बन्धियों, मित्रों आदि को प्रीतिभोज पर आमंत्रित किया है। कृपया आप मेरे घर पर पधारकर मेरे पुत्र को आशीर्वाद देते हुये मेरे घर को पावन करें।

फकीर ने कहा–भाई! आपकी भक्ति से मैं बहुत प्रसन्न हूँ। लेकिन हमें आगे के गांव में जल्दी और समय पर पहुंचना है। इस कारण इस बार आपका हम आतिथ्य स्वीकार नहीं कर पायेंगे। फिर कभी संयोग होगा तो अवश्य आयेंगे।

फकीर की यह बात सुनकर इनके शिष्य को लगा कि गुरू आये अवसर को हाथ से गंवा रहे है। भूख भी लगी है और यजमान ने अपने पुत्र के जन्म दिवस पर भोजन के लिये आमंत्रित किया है। तो निश्चित रूप से कई

प्रकार की मिठाईयां आदि स्वादिष्ट भोजन करने का अवसर मिलता। पता नहीं गुरू को क्या हो गया जो इस व्यक्ति की भोजन भक्ति को टाल गये।

गुरू शिष्य दोनों इस गांव की सीमा छोड़ आगे के गांव में पैदल जा रहे थे। रास्ते में पानी के स्त्रोत पर जल पीने के साथ विश्राम करने रूके। शिष्य को अब भी बार-बार पहले गांव के उस नास्तिक व्यक्ति पर रह-रहकर गुस्सा आ रहा था और उसे सबक सिखाने के लिये गुरू से क्रोध भरे शब्दों में कहा-गुरूदेव! आपने मुझे उस नास्तिक को जो आपका गालियां दे रहा था उसको सबक सिखाने के लिये क्यों रोका। गुरू ने कहा कि हम संन्यासी है अपने को किसी पर क्रोध नहीं करना चाहिये।

शिष्य गुरू के उपदेश को सुनकर शान्त तो हो गया लेकिन भूख सताने के कारण उसने गुरू से कहा-गुरूदेव! आपने दूसरे गांव के यजमान के आमंत्रण पर भोजन नहीं करने का निर्णय किया। जहां उसके यहां ढेर सारी विभिन्न प्रकार की मिठाईयां आदि बनी थी। किस कारण अपने को यह सब मिठाईयां छोड़कर आना पड़ा।

फकीर ने कहा–जिस यजमान के लिये हमें आमंत्रित किया। उसके यहां कई प्रकार की मिठाईयां बनी थी। हमने वहां भोजन नहीं किया। तो बता ये मिठाईयां किसके पास रहेगी। शिष्य ने तपाक से कहा- जिस यजमान ने हमें भोजन करने का आमंत्रण दिया उसके यहीं रहेगी।

फकीर ने शिष्य को कहा–देख पहले गांव में जिस व्यक्ति ने मुझे नहीं सहने वाली गालियां दी। मैंने उसे भी नहीं स्वीकार किया। तो बता ये गालियां किसके पास रही। शिष्य ने कहा-गुरूदेव! जिस नास्तिक व्यक्ति ने आपको गालियां दी वह उसी के पास रही।

तब फकीर ने शिष्य के सिर पर आशीर्वाद का हाथ फेरते हुए कहा-जिसे हम स्वीकार नहीं करते वह उसके पास रहती है। तो भला नास्तिक व्यक्ति की गालियों को जब हमने स्वीकार ही नहीं किया तो उस पर क्रोध करना संतों का काम नहीं है। गुरू के मुख से ऐसी बात सुनकर शिष्य गुरू के चरणों में गिर गया और नास्तिक व्यक्ति पर किये क्रोध पर पश्चाताप करने लगा।

(भूरचन्द जैन)

BOYD SMITHS PVT. LTD.
8, Netaji Subhas Road
B-3/5 Gillander House, Kolkata - 700 001
Ph: (O) 2220-8105/2139,(Resi) 2329-0629/0319

NAHAR
5/1, A.J.C. Bose Road, Kolkata - 700 020
Ph: (O) 2247-6874, (Resi) 2246-7707

KUMAR CHANDRA SINGH DUDHORIA
Azimganj House
7, Camac Street, Kolkata - 700 017
Ph: 2282-5234/0329

ARIHANT JEWELLERS
Shri Mahendra Singh Nahata
M/s BB Enterprises
8A, Metro Palaza, 8th Floor 1,Ho Chi Minh Sarani,
Kolkata - 700 071
Ph: 2288 1565 / 1603

CREATIVE LIMITED
12, Dargah Road, Post Box:16127,
Kolkata -700 017
Ph: (033) 2240-3758/1690/3450/0514
Fax: (033) 2240 0098, 2247 1833

IN THE MEMORY OF SOHANRAJ SINGHVI
VINAYMATI SINGHVI
93/4 Karaya Road, Kolkata - 700 019
Ph: (O) 2220 8967, (Resi) 2247 1750

MAHASINGH RAI MEGH RAJ BAHADUR
Goalpara, Assam

RATAN LAL DUNGARIA
16B, Ashutosh Mukherjee Road
Kolkata - 700 020, Ph: (Resi) 2455-3586

M/S. METROPOLITAN BOOK COMPANY
93, Park Street, Kolkata - 700 016
Ph: 2226-2418, (Resi) 2475-2730, 2476-8730

GAUTAM TRADING CORPORATION
32, Ezra Street, Kolkata - 700 001
6th Floor, Room No - 654
Ph: (O) 2235 0623, (Resi) 2239-6823

TARUN TEXTILES (P) LTD.
203/1, Mahatma Gandhi Road,
Kolkata - 700 007
Ph: 2238-8677/1647, 2239-6097

KESARIA & CO.
Jute Tea Blenders & Packeteers Since 1921
2, Lal Bazar Street, Todi Chambers, 5th Floor
Kolkata - 700 001
Ph: (O) 2348-8576/0669/1242
(Resi) 2225-5514, 2237-8208, 2229-1783

APRAJITA
Air Conditioned Market
Kolkata - 700 071
Ph: (O) 2282-4649, (Resi) 2247-2670

ASHOK KUMAR RAIDANI
6, Temple Street, Kolkata - 700 072
Ph: 2237-4132, 2236-2072

SUDIP KUMAR SINGH DUDHORIA
Indian Silk House Agencies
129, Rasbehari Avenue, Kolkata, Ph: 2464-1186,

SURANA MOTORS PVT. LTD.
84 Parijat, 8th Floor,
24A, Shakespeare Sarani
Kolkata - 700 071
Ph: 2247-7450/5264

PANKAJ NAHATA
Oswal Manufacturers Pvt. Ltd.
Manufacturers & Suppliers of Garments &Hosiery Labels
4, Jagmohan Mallick Lane, Kolkata - 700 007
Ph: (O) 2238-4755, (Resi) 2238-0817

APARAJITA BOYED
Suravee Business Services Pvt. Ltd.
9/10, Sitanath Bose Lane,
Salkia, Howrah - 711 106
Ph: 2665-3666/2272
e-mail: Suravee@cal2.vsnl.net.in
sona@cal3.vsnl.net.in

B.W.M.INTERNATIONAL
Manufacturers & Exporters
Peerkhanpur Road, Bhadohi - 221401 (U.P.)
Ph: (O) 05414-25178, 25779, 25778
Fax: 05414-25378 (U.P.) 0151-202256 (Bikaner)

SAGAR MAL SURESH KUMAR
187, Rabindra Sarani
Kolkata - 700 007
Ph: Gaddy- 2233-1766, 2238-8846
Mobile: 9831028566
Resi : 2355-9641/7196

LALCHAND DHARAMCHAND
Govt. Recognised Export House
12, India Exchange Place, Kolkata-700 001
Ph: (B) 2220-2074/8958 (D) 2220-0983/3187
Cable: SWADHARMI, Fax: (033) 2220 9755
Resi: 2464-3235/1541, Fax: (033) 2464 0547

GLOBE TRAVELS
Contact for better & Friendlier Service
11, Ho Chi Minh Sarani, Kolkata - 700 071
Ph: 2282-8181

SMT. KUSUM KUMARI DOOGAR
C/o Shri P.K. Doogar,
Amil Khata, P.O. Jiaganj, Dist: Murshidabad, Pin- 742123
West Bengal, Phone: 03483-56896

SHRI JAIN SWETAMBER SEVA SAMITI
13, Narayan Prasad Babu Lane
Kolkata - 700 007,
Ph: 2239-1408

AJAY DAGA, AJAY TRADERS
203 /1 M. G. Road, Kolkata - 700 007
Ph: (O) 2238-9356/0950 (Fact). 2557-1697/7059

COMPUTER EXCHANGE
Park Centre' 24 Park Street
Kolkata - 700 016, Ph: 2229-5047/9110

SUNDERLAL DUGAR
R. D. B. Industries Ltd.
Regd. Off: Bikaner Building
8/1 Lal Bazar Street, Kolkata - 700 001
Ph: 2248-5146/6941/3350, Mobile: 9830032021

SURENDRA SINGH BOYED
Sovna Apartment
15/1 Chakrabaria Lane,
Kolkata - 700 026, Phone : 2476-1533

MUSICAL FILMS (P) LTD
9A, Esplanade East
Kolkata - 700 069

ABL INTERNATIONAL LTD.
1, Shakespeare Sarani, Kolkata - 700 071.
Ph: 2282-7615/7617/2726, Gram : Sudera

SHIV KUMAR JAIN
"Mineral House"
27A, Camac Street, Kolkata - 700 016
Phone : (Off) 2247-7880, 2247-8663
(Res) 2247-8128, 2247-9546

PRADIP KUMAR LUNAWAT
P-44 Dr. Sundari Mohan Avenue
Kolkata - 700 014, Phone : 2249-0103

NAKODA METAL
Deals in all kinds of Aluminium
32A Brabourne Road
Kolkata - 700 001 Ph: 2235-2076, 2235-5701

ARBEITS INDIA
8/1, Middleton Road, 8th Floor, Room No.4
Kolkata - 700 071, Ph: 2229 6256/8730/1029
Resi: 2247 6526/6638/22405126
Telex: 2021 2333, ARBI IN, Fax : 2226 0174

DR. NARENDRA L. PARSON & RITA PARSON
18531 Valley Drive
Villa Park, California 92667 U.S.A.
Phone : 714-998-1447714998-2726,
Fax : 7147717607

SPACE & WINGS
Travel Agents
Domestic & International Airlines
Phone : 2242-7806/8835/5852
10, Dr. Rajendra Prasad Sarani (Clive Row)
1st Floor, Kolkata - 700 001 Fax : 2242 8831
P.S.A. Biman Bangladesh Airlines

RAJIB DOOGAR
305, East Tomaras Avenue
Savoy, IL 61874-9495
USA
Phone : 001-217-355-0174/0187
e-mail : doogar@uiuc.edu

SUBHASH & SUVRA KHERA
6116, Prairie Circle
Mississauga LS N5Y2
Canada
Phone : 905-785-1243

M/S. SARAT CHATTERJEE& CO. (VSP) PVT. LTD.
Regd Office 2, Clive Ghat Street, (N. C. Dutta Sarani)
2nd Floor, Room No. 10, Kolkata - 700 001
Ph: 2220-7162, 2261-0540, Fax : (91)(33)2220 6400
e-mail: sccbss@cal2.vsnl.net.in

N. K. JEWELLERS
Valuable Stones, Silver wares
Authorised Dealers: Titan, Timex & H. M. T.
2, Kali Krishna Tagore Street (Opp. Ganesh Talkies)
Kolkata - 700 007 (Phone : 2239-7607)

अ angan
Rajasthan Village Theme Resturant at Swabhumi
89/c, Narkeldanga Main Road, Kolkata - 700 054
Phone : 2359 2031, e-mail : www.jiggis.com

PRITAM ELECTRIC & ELECTRONIC PVT. LTD.
Shop No. G- 136, 22, Rabindra Sarani,
Kolkata - 700 073, Phone : 2236-2210

MAHENDRA TATER
147, M. G. Road
Kolkata - 700 007, Phone : 2227-1857

RABINDRA SINGH NAHAR
40/4A, Chakraberia South, Kolkata - 700 020
Phone : (O) 2244-1309, (R) 2475-7458

जो हिंसात्मक प्रवृत्ति से विलग है,
वही बुद्ध, ज्ञानी हैं
WITH BEST WISHES

VEEKEY ELECTRONICS
Madhur Electronics, 29/1B, Chandani Chowk
3rd floor, Kolkata - 700 013
Ph: 2352-8940/334-4140
(Resi) 2352-8387/9885

MAUJIRAM PANNALAL
Citizen Umbrellas
45, Armenian Street, Kolkata - 700 007
Phone : (Shop) 2242-4483/9181, (O) 2238-1396/1871
Fax : 2231-2151, 2666-6013

BHEEKAM CHAND DEEP CHAND BHURA
D. C. Group Pvt. Ltd, Sagar Estate, 5th Floor
2, Clive Ghat Street, Kolkata - 700 007
Phone : 2220-5229/5121

ROYAL TOUCH OVERSEAS CORPORATION
47, Pandit Purushottam Roy Street, 2nd Floor,
Kolkata - 700 007, Phone : (033)2230-1329, 2232-1033
Fax : 91-33-2302413

ELECTO PLASTIC PRODUCTS PVT. LTD.
22 Rabindra Sarani, Kolkata - 700 073
Phone : 2236-3028, 2237-4039

KRISHNA JUTE COMPANY
Jute Broker & Dealer
9, India Exchange Place, Kolkata - 700 001
Phone : 2220-0874/9372, 2221-0246

LILY SUKHANI
7, Bright Appartment, 7 Bright Street
Flat No. 7 C., Kolkata - 700 019
Phone : 2287-0448

M/S. SETHIA OIL INDUSTRIES LTD.
Manufactureres of De oiled cakes & Refined oil.
Lucknow Road, PO. Sitapur - 261001 (U.P.)
Phone: 05862/42017/42073

M/S. SHREE SILK STORE
House of :
Banarasi Sarees & Velvet Articles etc.
P-25, Kalakar Street, Jain Katra
Kolkata - 700 007
Phone: 2268 2671, 666 4422

SAROJ DUGAR
Fancy saree, bed covers
34/1J. Ballygunge Circular Road
Kolkata - 700 019, Phone: 2475 1458

M/S. POLY UDYOG
Unipack Industries
Manufacturers & Printers of HM; HDPE,
LD, LLDPE, BOPP PRINTED BAGS.
31-B, Jhowtalla Road
Kolkata - 700 017, Phone: 2247 9277, 2240 2825
Tele Fax: 22402825

M/S. B.C. JAIN JEWELLER'S (PVT.) LTD.
Govt. approved valuer for Jewellery.
Director: Bimal Chand Jain/Vikash Jain/Vivek Jain
39, Burtolla Street, Kolkata - 700 007

DHANDHIA BROS
6/1 Hara Prasad Dey lane, Kolkata - 700 007
Phone: (R) 2239-6241/2950 (O) 2239-0581

M/s. MUKUND JEWELLERS
manufactures of American Diamand
Jewellery, Gold & Silver Goods &
Dealers in imitation Jewellery
P-37A, Kalakar Street, Kolkata - 700 007
Phone: 2232 3876

SHRI MANILAL RAJENDRA KUMAR JAIN (DUSAJ)
Dealers : Diamond, Precious Stones, Semi Stones &
Readymade Ornaments,
Phone: 2237 5869/6476
(Mobile): 98301017091, 9830142191

DEEPAK KUMAR SANDEEP KUMAR NAHATA
Dealers in Diamond
Manufactures of Precious & Semi Precious Ornaments
Burtala, Kolkata - 700 007,
Phone: (G) 2238-0900 (M) 9830094325

BADALIA GEMS PVT. LTD.
BADALIA HOUSE
66/3, Beadon Street, Kolkata - 700 006
Phone: (O) 2554-8999/8997 (R) 2533-9985,
Fax : 033 5548999, e-mail : shashibadalia@usa.net

M/S. BEEKAY VANIJYA PVT. LTD.
City Centre
19, Synagogue Street
5th Floor, Room No. 5342535
Kolkata - 700 001
Phone: 2210-3239, 2232-0144, 2238-7281
Fax: 033-2210-3253 (M) 9831001739
e-mail : bktarfab@satyam.net.in

WHILE PURCHASING HEASIAN, SACKING, YARN AND DECORATIVE FURNISHING FABRICS & OTHER JUTE PRODUCTS, PLEASE INSIST ON QUALITY PRODUCTION.

We are, always ready to meet the Exact type of your requirement.

AUCKLAND INTERNATIONAL LTD.

(UNIT : AUCKLAND JUTE MILLS)

"KANKARIA ESTATE"

6, Little Russel Street,
Kolkata - 700 071

A RECOGNISED EXPORT HOUSE

Cable : SWANAUCK, KOLKATA
Telex : 212396 AUCK IN
Codes : BENTLEY'S SECOND
Phone: 22479921/9720,22402683

Registered Office &
'JUTE MILL' at jagatdal 24-Parganas
BHATPARA 81-2757/2758/2038

ऐसा विश्वास दिल में जमाते चलो
सिद्ध, अरिहन्त को मन में रमाते चलो,
वक्त आयेगा ऐसा कभी न कभी
सिद्धि पायेंगे हम भी कभी न कभी।

KUSUM CHANACHUR

Founder: Late Sikhar Chand Churoria

Our Quality Product of Chanachur.
Anusandhan , Raja,
Rimghim, Picnic,
Subham, Bhaonagari Ghantia,

卐

Manufactured By
M/s. K. C. C. Food Product
Prop. Anil Kumar, Sunil Kumar Churoria
P. O. Azimganj, Pin - 742122
Dist: Murshidabad
Phone: Code: 03483 No.: 53232
Cal. Phone: No.: 033 2230 0432, 2522-1580

28 water supply schemes
315,000 metres of pipelines
110,000 kilowatts of pumping stations
180,000 million litres of treated water
13,000 kilowatts of hydel power plants

(And in place where Columbus would have feared to tread)

SPML

Engineering Life

SUBHASH PROJECTS & MARKETING LIMITED

113 Park street, Kolkata 700 016

Tel : 2229 8228, Fax : 2229 3882, 2245 7562

e-mail : info@subhash.com, website: www.subhash.com

Head Office: 113 Park Street, 3rd floor, South Block, Kolkata-700016 Ph:(033)2229-8228.
Registered Office: Subhash House, F-27/2 Okhla Industrial area, Phase II New Delhi-110 020
Ph: (011) 692 7091-94, Fax (011) 684 6003. Regional Office: 8/2 Ulsoor Road,
Bangalore 560-042 Ph: (080) 559 5508-15, Fax: (080) 559-5580.

Laying pipelines across one of the nation's driest region, braving temparature of 50⁰ C.

Executing the entire water intake and water carrier system including treatment and allied civil works for the mammoth Bakreswar Thermal Power Project.

Bulling the water supply, fire fighting and effluent disposal system with deep pump houses in the waterlogged seashore of Paradip.

Creating the highest head-water supply scheme in a single pumping station in the world at Lunglei in Mizoram-at 880 metres, no less.

Building a floating pumping station on the fierce Brahmaputra.

Ascending 11,000 feet in snow laden Arunachal Pradesh to create an all powerful hydro-electric plant.

Delivering the impossible, on time and perfectly is the hallmark of Subhash Projects and Marketing Limited. Add to that our credo of when you dare, then alone you do. Resulting in a string of acheivements. Under the most arduous of conditions. Fulfilling the most unlikely of dreams.

Using the most advanced technology and equipment, we are known for our innovative solution. Coupled with the financial strength to back our guarantees.

Be it engineering design. Construction work or construction management. Be it environmental, infrastructural, civil and power projects. The truth is we design, build, operate and maintain with equal skill. Moreover, we follow the foolproof Engineering, Procurement and Construction System. Simply put, we are a single point responsibility. A one stop shop.

So, next time, somebody suggests that deserts by definition connote dryness, you recommend he visit us for a lesson in reality.

शस्त्र हिंसा एक से एक बढ़कर है।
किन्तु अशस्त्र अहिंसा से बढ़कर कोई शस्त्र नहीं।
अर्थात् अहिंसा से बढ़कर कोई साधना नहीं है।

THE GANGES MANUFACTURING COMPANY LIMITED

Chatterjee International Centre
33A, Jawaharlal Nehru Road,
6th Floor, Flat No. A-1
Kolkata - 700 071

Phone:

Gram "GANGJUTMIL"
Fax: + 91-33-245-7591
Telex: 021-2101 GANG IN

2226-0881
2226-0883
2226-6283
2226-6953

Mill

BANSBERIA

Dist: HOOGHLY
Pin-712 502
Phone: 2634-6441/2644-6442
Fax: 2634 6287

जैन मत तब से प्रचलित है
जबसे संसार में सृष्टि का आरम्भ हुआ।
मुझे इसमें किसी भी प्रकार की आपत्ति नहीं है
कि जैन धर्म वैदान्तिक दर्शनों से पूर्व का हैं।

Dr. Satish Chandra
Principal Sanskrit College, Kolkata

Estd. Quality Since 1940

BHANSALI

Quality. Innovation. Reliability

BHANSALI UDYOG PVT. LTD.

(Formerly: Laxman Singh Jariwala)

Balwant Jain - Chairman

A - 42, Mayapuri, Phase - 1, New Delhi - 110 064
Phone: 2514-4496, 2513-1086, 2513-2203
Fax: 91-011-5131184
e-mail: laxmanjariwala@gems.vsnl.net.in

With Best Compliments..... ?

MARSON'S LTD

MARSON'S THE ONLY TRANSFORMER MANUFACTURER IN EASTERN INDIA EQUIPPED TO MANUFACTURE 132 KV CLASS TRANSFORMERS

Serving various SEB's Power station, Defence, Coal India, CESC, Railways, Projects Industries since 1957.

Transformers type tested both for Impulse/Short Circuit test for Proven desing time and again.

PRODUCT RANGE

Manufactures of Power and Distribution Transformer
From 25 KVA to 50 MVA upto 132kv lever.
Current Transformer upto 66kv.
Dry type Transformer.
Unit auxiliary and stations service Transformers.

18, PALACE COURT
1, KYD STREET, KOLKATA - 700 016
PHONE: 2229-7346/4553, 2226-3236/4482
CABLE-ELENREP TLX-0214366 MEL-IN
FAX-00-9133-225948/2263236

शुभ कामनाओं सहित —

मनुष्य जीवन में ही सत्य कार्य करने का अवसर उपलब्ध होता है।

अहिंसा अमृत है, हिंसा विष है।

अनाम

—आत्मा—

• यह बात निर्विवाद है कि आत्मा है। मैं हूं या नहीं? इस शंका का जो समाधान करता है वही आत्मा है। आत्मा अरूपी पदार्थ है इसलिये जैसे आंखों से हम दूसरी चीजें देख सकते हैं वैसे उसे नहीं देख सकते। यद्यपि आत्मा के किसी तरह का रूप या आकार नहीं है तथापि आत्मा अवश्य है।

• आत्मा में गुण हैं। उन्हीं के द्वारा हम आत्मा को जानते हैं। आत्मा का मुख्य गुण उपयोग है। वह दो तरह का होता है। एक ज्ञानोपयोग और दूसरा दर्शनोपयोग। एक से हम वस्तुओं का ज्ञान कर सकते हैं और दूसरे से उन्हें देख सकते हैं। जानना और देखना ये आत्मा के गुण हैं।

• आत्मा का अनुभव होता है। आत्मा ही आत्मा को जानता है। संसार के अन्य पदार्थ आत्मा को नहीं जान सकते। जो आत्मा विश्व को जान सकता है उसे जानने वाला दूसरा कौन हो सकता है? उसे जो जानता है वह आत्मा ही है।

• आत्मा है तभी शरीर चल फिर सकता है। आँखे देख सकती हैं, कान सुन सकते हैं नाक सूंघ सकता है, जीभ चख सकती है, देह शीत उष्णादि का अनुभव कर सकता है और मन विचार कर सकता है।

• आत्मा न हो तो सुख दुःखादि जाने न जाय, मन विचार न कर सके, मुख बोल न सके, जीभ स्वाद न ले सके और शरीर हलन चलन न कर सके। आत्मा बिना शरीर मुर्दा कहलाता है।

• जब सारे संकल्प विकल्प दूर होते हैं और मन शान्त, स्थिर होता है तब जो अनुभव होता है—जो स्थिति होती है वही आत्मा का शुद्ध स्वभाव है। यह स्थिति जितनी ज्यादा रहती है उतनी ही ज्यादा आत्मा की महान् शक्तियां प्रगट होती हैं।

• आत्मा शरीर में है इस दृष्टि से विचार किया जाय तो आत्मा देह प्रमाण है। आत्मा ज्ञान स्वरूप है इस अपेक्षा से विचार करें तो वह विश्व व्यापक है। शुद्ध स्वरूप की अपेक्षा से आत्मा न लम्बा है न छोटा है, न हल्का है न भारी है। वह तर्क वितर्क से नहीं जाना जा सकता है।

In

Loving Memory of their parents

Late, Shree Phool chandji Kharad

&

Late, Smt. Narangi Devi Kharad

From :-

M/s Phool Chand Kharad & Sons

21, Kali Krishna Tagore Street

Kolkata - 700 007

Phone : 2233-1609, 2239-8628

M.M. & P.O./W.B./R.N.P.–45/2003
VoL. XXVII. NO. 7. TITTHAYARA October 2003
Registered with the Registrar of Newspapers for India
under No. 30181/77

ज्ञानी वही है जो किसी भी प्राणी की हिंसा न करें। सभी जीव जीना चाहते है मरना कोई नहीं चाहता अतः संसार के त्रस और स्थावर सभी प्राणियों को जाने या अनजाने में न मारना चाहिये, न दूसरों से मरवाना चाहिये, ना ही मन वचन काया से किसी को पीड़ा पहुँचानी चाहिये।

Kamal Singh Rampuria
Rampuria Mansions
17/3 Mukhram Kanoria Road, Howrah
Phone No. : 2666 7212/7225